केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो० 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो० 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 208 रविवार 18 फरवरी 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

इसरों ने लॉन्च किया इनसैट–3डीएस

नई दिल्ली (आभा)। इसरो ने शनिवार को इनसैट–3डीएस को लॉन्च कर दिया। इस सैटेलाइट के जरिए भारत के लिए मौसम की सटीक जानकारी जुटाना आसान होगा। इस सैटेलाइट को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर से लॉन्च किया गया। सैटेलाइट का दूसरे चरण का प्रदर्शन सामान्य है और पेलोड बेयरिंग को भी अलग कर दिया गया है।

इस सैटेलाइट की मिशन लाइफ 10 साल है। यानी अगले दस साल तक यह मौसम में होने वाले सभी बदलावों के बारे में जानकारी मुहैया कराता रहेगा। इस सैटेलाइट के ऊपर करीब 500 करोड़ रुपए का खर्च आया है। एक बार वर्किंग मोड में आने के बाद यह तूफान के साथ–साथ जंगली आग, बर्फबारी, धुआं और बदलते पर्यावरण की भी जानकारी देगी। इस उपग्रह का उद्देश्य पृथ्वी की सतह और समुद्री अवलोकनों के अध्ययन को बढ़ावा देना है। 51.7 मीटर लंबा जीएसएलवी–एफ14 रॉकेट यहां से प्रक्षेपित किया गया।

प्रक्षेपण को देखने के लिए एकत्र भीड़ ने रॉकेट के रवाना होने पर तालियां बजाकर खुशी जताई। इसरो ने कहा कि 2,274 किलोग्राम वजनी उपग्रह भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) सहित पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत विभिन्न विभागों को सेवा प्रदान करेगा।

मण्डलीय एफपीओ कार्यशाला 27 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । कृषि उत्पादक संगठन (एफपीओ) की मण्डल स्तरीय कार्यशाला मण्डलायुक्त की अध्यक्षता में 27 फरवरी को 11.00 बजे से आयुक्त सभागार में आयोजित की जायेंगी। उक्त जानकारी संयुक्त कृषि निदेशक अविनाश चन्द्र तिवारी ने दी है। उन्होने बताया कि यूपी एफपीओ शक्तिपोर्टल पर बस्ती में 20, संतकबीर नगर में 10 तथा सिद्धार्थनगर में 20 एफपीओ प्रतिभाग करेंगे। इसमें उप निदेशक कृषि, कृषि अधिकारी, उद्यान, मत्स्य, पशुपालन, गन्ना विभाग के जनपदीय अधिकारी भी प्रतिभाग करेंगे।

ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी 19 को

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । जिलाधिकारी के निर्देशानुसार ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी /4.0 का आयोजन 19 फरवरी को मध्यान्ह् 12.00 बजे से कलेक्ट्रेट सभागार में प्रस्तावित है। उक्त जानकारी देते हुए उपायुक्त उद्योग हरेन्द्र प्रताप ने बताया है कि उक्त कार्यक्रम में जनपद के समस्त निवेशक आमंत्रित है। उन्होने बताया कि ग्राउण्ड ब्रेकिंग सेरेमनी लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम का सजीव प्रसारण भी उक्त कार्यक्रम में दिखाया जायेंगा। उन्होने बताया कि जनपद के प्रभारी मंत्री, सांसद, समस्त विधायकगण, मण्डलायुक्त एवं अन्य जनप्रतिनिधिगण उक्त कार्यक्रम में उपस्थित होंगे।

स्ट्रांगरूम का निरीक्षण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । आगामी लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी अंद्रा वामसी एवं पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी ने मंडी समिति स्थित स्ट्रांगरूम, मतगणना शेड, वाहन पार्किंग तथा सम्पूर्ण परिसर का निरीक्षण किया। इस संबंध में दोनों अधिकारियों ने सम्बंधित अधिकारी को आवश्यक कार्य कराने हेतु निर्देशित किया। निरीक्षण के दौरान अपर जिलाधिकारी कमलेश चन्द्र, उपजिलाधिकारी सदर गुलाब चन्द्र, मण्डी समिति के सचिव एवं संबंधित अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

पुत्र और समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल हो सकते हैं कमलनाथ

नई दिल्ली (आभा)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के भाजपा में शामिल होने की अटकलें तेज हो गई हैं। उन्होंने शनिवार को अपना छिंदवाड़ा दौरा निरस्त किया और भोपाल होकर दिल्ली के लिए रवाना हुए। उनके साथ उनके सांसद बेटे नकुलनाथ भी दिल्ली जा रहे हैं। इस दौरे को लेकर प्रदेश की राजनीति में भूचाल आ गया है। दिल्ली में शनिवार से भाजपा का राष्ट्रीय अधिवेशन शुरू हो रहा है। ऐसे में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा समेत प्रदेश भाजपा के कई बड़े नेता दिल्ली में हैं।

दिल्ली में अटकलों पर मीडिया के सवालों पर कमलनाथ बोले कि 'जब कोई बात होगी, तब बताऊंगा। जो चल रहा है उससे एक्साइटेड नहीं हूं।' हालांकि, उन्होंने न तो भाजपा में शामिल होने की बात से इनकार किया और न ही इकरार। इससे सस्पेंस और गहरा गया है। कमलनाथ के साथ उनके कई समर्थक विधायक कांग्रेस छोड़ सकते हैं। इसके साथ ही कम से कम दस बड़े नेता, जिनमें दो पूर्व मंत्री भी शामिल हैं, कांग्रेस छोड़ सकते हैं।

भाजपा में शामिल होने की अटकलों के बीच दिल्ली स्थित पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के घर की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। उनके घर पर अतरिक्त जवानों को तैनात किया गया है। कमलनाथ और नकुल नाथ अभी दिल्ली में हैं।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस के 66 विधायक हैं। कमलनाथ के भाजपा में शामिल होने की अटकलों के बीच उनके साथ 23 विधायकों के भी कांग्रेस छोड़ने के कयास लगाए जा रहे हैं। इसके अलावा दो से तीन महापौर समेत कई अन्य भी भाजपा में जा सकते हैं।

इस बीच कमलनाथ के इस्तीफे की अटकलें भी लग रही हैं। बताया जा रहा है कि उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने इस्तीफा कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल को सौंप दिया है। हालांकि, छिंदवाड़ा से कमलनाथ के करीबी नेता सैयद जाफर ने इन सूचनाओं का खंडन किया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि 'कमलनाथजी और नकुलनाथजी के इस्तीफे को लेकर जो खबरें मीडिया में चल रही हैं, वे सब निराधार हैं। कमलनाथजी ने कोई इस्तीफा नहीं दिया है।' इससे पहले सैयद जाफर ने ही लिखा था कि 'हनुमान भक्त कमलनाथ जी ने 45 साल से अधिक कांग्रेस में सेवा देने के बावजूद भी कभी भी धार्मिक राष्ट्रवाद और विकास के मुद्दों पर समझौता नहीं किया।

पुलिस भर्ती परीक्षा का डीएम, एसपी ने किया निरीक्षण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । उ0प्र0 आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती 2024 की लिखित परीक्षा को सकुशल, शांतिपूर्ण व पारदर्शी ढंग से सम्पन्न कराने के दृष्टिगत जिलाधिकारी अंद्रा वामसी एवं पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी ने परीक्षा केंद्रों यथा कर्मादेवी शिक्षण संस्थान, राजकीय इंटर कालेज, खैर इंटर कॉलेज, श्रीकृष्णा पाण्डेय इंटर कॉलेज, एजुकेशन एकेडमी संसारपुर फुटहिया आदि का भ्रमण/निरिक्षण किया।

दोनो अधिकारियों ने कॉलेज/विद्यालयों के प्रधानाचार्य व प्रबंधन से वार्ता कर शासन से प्राप्त आदेशों का पालन कराने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिया।

अपनापन की भावना से होगी दिव्यांग बच्चों के मानसिक क्षमता में वृद्धि- गोपाल कृष्ण

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सहयोगात्मक और अपनापन की भावना से ज्ञान बच्चों की मानसिक क्षमता में वृद्धि की जा सकती है। उन्हें सतत शिक्षण –प्रशिक्षण व समुचित वातावरण प्रदान करके उनके आत्मविश्वास में वृद्धि की जा सकती है।

यह बातें नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड के उपाध्यक्ष गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने कही। श्री अग्रवाल सामाजिक न्याय मंत्रालय भारत सरकार के अधीन कार्यरत राष्ट्रीय न्यास के सहयोग से संचित विकास संस्थान द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण के समापन पर व्यक्त किया। ग्राम मरवटिया में दिव्यांग बच्चों के लिए संचालित घरौंदा केंद्र में किया गया। दो दिवसीय प्रशिक्षण में 15 मानसिक दिव्यांग बच्चों. प्रोफेशनल एवं पांच दिव्यांग जनों के अभिभावकों ने हिस्सा लिया।

संस्थान के निदेशक प्रमोद कुमार ने बताया कि बच्चों में सेल्फ एडवोकेसी की क्षमता विकसित करने तथा अभिभावकों व अन्य लोगों को मानसिक दिव्यांग बच्चों के साथ अपनी जाने वाली व्यवहार पद्धतियों की जानकारी दी गई। प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर शिवांशु शुक्ला एवं राघव सिंह द्वारा सेल्फ एडवोकेट्स दिव्यांग जनों को जीवन कौशल मेंटरिंग एवं अभिभावक की भूमिका प्रोफेशनल की भूमिका सहित अन्य विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। नरसिंह नारायण यादव, अयोध्या प्रसाद यादव,अभिनव वर्मा, विनय कुमार, रवि प्रजापति, प्रभावती, सुमन यादव, उदयभान, प्रमोद कुमार प्रजापति, अर्चना यादव, सुनील कुमार यादव व दिब्यांग बच्चे श्रवण कुमार, श्यामू प्रसाद, वाजिद अली, मुशताक, हेमराज, पंकज निषाद, प्रदीप चंद्र सहित अन्य लोगो ने हिस्सा लिया।

स्वास्थ्य मिशन कर्मचारियों ने मांगों के समर्थन में शुरू किया पत्र भेजो अभियान

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । संयुक्त राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कर्मचारी संघ उत्तर प्रदेश संबद्ध भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश नेतृत्व के आवाहन पर 12 फरवरी से 22 फरवरी 2024 तक मुख्यमंत्री को प्रदेश भर के राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के कर्मचारियों द्वारा पत्र भेजने का अभियान चलाया जा रहा है। जिसका उद्देश्य वर्ष 2016 से प्रतिवर्ष भारत सरकार द्वारा तीन प्रतिशत अतिरिक्त बजट राज्यों को वेतन विसंगति दूर करने हेतु दिया जा रहा है। जिसके उपयोग से हरियाणा, मध्य प्रदेश, बिहार सरकार ने वेतन नीति का निर्धारण कर संविदा कर्मियों की वेतन विसंगति दूर कर दी मगर वहीं उत्तर प्रदेश में विभागीय अधिकारियों की लापरवाही और प्रदेश सरकार के ध्यान न देने कारण अभी तक आठ वर्ष पूर्ण होने के बावजूद उस बजट का उपयोग कर संविदा कर्मियों को कोई लाभ नहीं दिया गया, इस विषय को मुख्यमंत्री के संज्ञान में लाना हमारा उद्देश्य है।

उक्त के क्रम 12 फरवरी से लेकर 22 फरवरी तक उत्तर प्रदेश के समस्त सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के एनएचएम कर्मचारियों से अपील है कि अधिक से अधिक पत्र डाक के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी को भेजने की कृपा करें तथा उसे दिनांक 21 फरवरी को ग (ट्विटर) पर हैज टैग भी करें। यदि फिर भी कोई कार्यवाही नहीं होती है तो 25 फरवरी को आगरा में प्रदेश की बैठक में निर्णय लेते हुये आगे की रणनीति तय की जाएगी।

पत्र लेखन अभियान हेतु संयुक्त राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कर्मचारी संघ बस्ती शाखा के बैनर तले आज सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र हर्रैया में मण्डल संयोजक संजय पाण्डेय, जिला संयोजिका अनीता चौधरी, जिला महामंत्री राहुल श्रीवास्तव एवं जिला अभियान प्रभारी जन्मेजय उपाध्याय के संयोजन में पत्र लेखन कार्य हुआ। वहीं समस्त संविदा कर्मचारियों ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखा। पूरे प्रदेश से दस हजार एवं बस्ती जनपद से 600 पत्र मुख्यमंत्री को भेजने का लक्ष्य है।

इस दौरान जिला अभियान सह प्रभारी विजय पाल, सुनील कुमार, रवि सोनकर, प्रवीण पाण्डेय, दिव्या पाण्डेय, अंजली सिंह, नसीमा अंसारी, इंद्रा राई, कविता गौतम, पाखी, पूजा वर्मा, माया साहू सहित अन्य संविदा कर्मचारी उपस्थित रहे।

भाई-भाई में टकराव से कमजोर होगा देश-राहुल गांधी

वाराणसी (आभा)। यूपी में सात दिन तक चलने वाली भारत जोड़ो यात्रा को राहुल गांधी बीच में ही छोड़कर वायनाड के लिए रवाना हो गए। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दूसरे दिन वाराणसी से भदोही जाते समय राहुल गांधी अचानक से बाबतपुर एयरपोर्ट के लिए निकल गए। यहां से राहुल गांधी सीधे वायनाड के लिए रवाना होंगे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट डालकर बताया कि राहुल गांधी की वायनाड में उपस्थिति की तत्काल आवश्यकता है। इस वजह से उन्हें वायनाड के लिए जाना पड़ रहा है। भारत जोड़ो न्याय यात्रा कल यानि 18 फरवरी को दोपहर तीन बजे से प्रयागराज से एक बार फिर यात्रा की शुरुआत की जाएगी। बतादें कि राहुल गांधी की राजपुरा में जनसभा होनी थी, जो जिसे अब रद्द कर दिया गया है। कांग्रेस की

ओर से जारी शेड्यूल के मुताबिक राहुल गांधी शाम पांच बजे राजपुरा में एक जनसभा का आयोजन करने वाले थे। अचानक से वायनाड जाने के कारण उनकी ये जनसभा फिलहाल रद्द कर दी गई है।

भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दूसरे पड़ाव में शनिवार वाराणसी के गोदौलिया चौराहे पर पहुंचे राहुल गांधी ने कहा, यह देश मोहब्बत का देश है, नफरत का नहीं। उन्होंने कहा कि भाई–भाई में टकराव से देश कमजोर होगा और देश को जोड़ना ही सच्ची देश भक्ति है। राहुल गांधी ने कहा, मैं गंगा जी के सामने अहंकार से नहीं आया हूं सिर झुकाकर आया हूं। इस यात्रा में सबको लगना चाहिए कि वह अपने भाई से मिलने आये हैं। उन्होंने कहा कि देश में दो भारत हैं, एक अमीरों का और एक गरीबों का भारत। मीडिया को लेकर गांधी ने कहा, ये सारे चौनल उद्योगपतियों के हैं। ये देश के किसानों, मजदूरों के मुद्दे को नहीं दिखाएंगे। ये मीडिया मोदी जी को 24 घंटे दिखाएगा, ऐश्वर्या राय को दिखाएगा, लेकिन असल मुद्दे को नहीं दिखाएगा। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दूसरे दिन गोलेगड्डा क्षेत्र से प्रारंभ इस यात्रा में राहुल गांधी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय और अन्य कांग्रेसी नेताओं के साथ खुली जीप में खड़े होकर काशी विश्वनाथ मंदिर गए और मंदिर के गोदौलिया क्षेत्र में भ्रमण किया। अपना दल (कमेरावादी) की नेता और कौशांबी के सिराथू से विधायक पल्लवी पटेल भी वाराणसी में इस यात्रा में शामिल हुईं। वह खुली जीप में राहुल गांधी के बाईं ओर खड़ी थीं। उत्तर प्रदेश में भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुक्रवार को चंदौली जिले से शुरू हुई।

अयोध्या में 10155 करोड़ से अधिक का होगा निवेश, 20 हजार से अधिक युवाओं को मिलेगा रोजगार

लखनऊ (आभा)। रामनगरी अयोध्या! जनवरी में यहां 500 वर्षों की प्रतीक्षा समाप्त हुई और श्रीरामलला अपने नव्य–भव्य व दिव्य मंदिर में विराजमान हो गए। अब 19 से 21 फरवरी के मध्य होने वाले ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी (जीबीसी 4.0) के जरिए योगी सरकार यहां के लगभग 20 हजार से अधिक युवाओं के लिए रोजगार सृजन का मार्ग प्रशस्त करेगी।

सीएम योगी ने रामनगरी को विकास की नई पहचान दिलाई है। 19 फरवरी को होने वाले जीबीसी में यहां 10155.79 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्तावित हैं। योगी सरकार की पहल से पर्यटन के क्षेत्र में यहां 3129 करोड़ रुपये से अधिक के प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। यहां सर्वाधिक तीन हजार करोड़ रुपये के निवेश द हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा ग्रुप की तरफ से किए जाने की तैयारी है।

योगी सरकार के निर्णयों से स्पष्ट हो गया है कि अयोध्या के विकास के साथ ही आर्थिक मोर्चे पर भी गति मिलेगी। निवेश से युवाओं में रोजगार के अवसर बढेंगे और उन्हें महानगरों की ओर काम की तलाश में भटकना नहीं पड़ेगा। इससे अयोध्या और आसपास के लोगों में प्रसन्नता है।

भाजपा ओ.बी.सी. मोर्चा ने फूंका सपा प्रमुख अखिलेश यादव का पुतला

-मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव पर अभद्र टिप्पणी दुर्भाग्यपूर्ण, देश से माफी मांगे अखिलेश यादव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । शनिवार को भारतीय जनता पार्टी ओ.बी.सी. मोर्चा के जिलाध्यक्ष एवं पूर्व ब्लाक प्रमुख ब्रहमदेव देव यादव 'देवा' के नेतृत्व में पार्टी नेताओं, पदाधिकारियों ने शास्त्री चौक पर समाजवादी पार्टी प्रमुख एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का पूतला फूंका।

अखिलेश यादव का पूतला फूंकने के बाद ब्रहमदेव देव यादव 'देवा' ने कहा कि यादव समाज का हित भारतीय जनता पार्टी में सुरक्षित है। अखिलेश यादव ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव को कठपुतली मुख्यमंत्री बताकर जो अभद्र टिप्पणी किया है उससे यादव समाज के साथ ही भाजपा नेताओं, कार्यकर्ताओं में स्वाभाविक रोष है। कहा कि अखिलेश यादव जैसे विदेश में शिक्षित व्यक्ति को राजनीति में भाषा की मर्यादा बनाये रखनी चाहिये। कहा कि भाजपा सबका साथ, सबका विकास के लक्ष्य के साथ आगे बढ रही है। डा. मोहन यादव जैसे समर्पित कार्यकर्ता और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पर अभद्र टिप्पणी किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके लिये अखिलेश यादव पूरे देश से माफी मांगे वरना यादव समाज उन्हें क्षमा नहीं करेगा और आने वाले लोकसभा के चुनाव में यादव समाज के लोग एकजुट होकर भाजपा के पक्ष में मतदान करेंगे।

समाजवादी पार्टी प्रमुख एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव का पूतला फूंकने वालों में मुख्य रूप से एम.एल.सी. प्रतिनिधि संदीप यादव, आशुतोष यादव, प्रभात कुमार गौतम, सर्वेश यादव, तीजराम यादव, गौरीशंकर, सचिन के साथ ही बड़ी संख्या में भारतीय जनता पार्टी ओ.बी.सी. मोर्चा के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और यादव समाज के लोग शामिल रहे।

विश्वगुरू बनेगा भारत–मिशाल स्मिथ शर्मा

-बस्ती आयी अमेरिका की स्मिथ को भा गया भारत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. राम उजागर शर्मा की पौत्र बधू मिशाल स्मिथ शर्मा ने दुर्गेश कुमार मिश्र की स्मृति में आयोजित साहित्यिक समारोह में कहा कि भारत को विश्व गुरू बनने से कोई रोक नहीं सकता। अमेरिका से अपने घर पहली बार बस्ती आयी वरिष्ठ अधिवक्ता श्याम प्रकाश शर्मा की पुत्र बधू मिशाल स्मिथ शर्मा अमेरिका के क्रिशिचियन परिवार से हैं और पुनीत शर्मा से विवाह के बाद उन्होने सनातन धर्म में रम गई। वे टूटी–फूटी हिन्दी बोलने के साथ ही गायत्री मंत्र का जाप करती है। मिशाल स्मिथ शर्मा ने कहा कि सनातन धर्म में विश्व कल्याण की भावना है जो उन्हें प्रेरित करता है।

एक वैवाहिक समारोह में दो दिनों के लिये भारत आयी मिशाल स्मिथ शर्मा ने कहा कि भारत आकर उन्हें जो अपनापन मिला वह सुखद है। वे अनगिनत सुखद यादों के साथ अमेरिका लौट रही है। कहा कि दुर्गेश कुमार मिश्र की स्मृति में मुझे जो सम्मान मिला उसकी यादें सदा बनी रहेंगी। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. राम उजागर शर्मा की पौत्र बधू मिशाल स्मिथ शर्मा को सम्मानित किये जाने पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामकृष्ण लाल 'जगमग' डॉ. त्रिभुवन प्रसाद मिश्र के साथ ही अनेक साहित्यकारों, कवियों ने प्रसन्नता व्यक्त किया है।

अरुणोदय दुबई कार्यक्रम से लौटे डा. वी.के. वर्मा, राजेश्वरी देवी का रोटरी पदाधिकारियों ने किया फूल मालाओं के साथ स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रोटरी मण्डल 3120 के 41 वें डिस्टिक एसेम्बली 'अरुणोदय दुबई' में रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर का प्रतिनिधित्व कर लौटे क्लब के ट्रेनर डा. वी के वर्मा और रोटेरियन राजेश्वरी देवी के बस्ती आगमन पर क्लब सदस्यों ने गांधीनगर स्थित एक शिविर कार्यालय पर फूल मालाओं के साथ स्वागत किया।

डा. वी.के. वर्मा और राजेश्वरी देवी ने अपने यात्रा के अनुभवों को साझा करते हुये कहा कि दुबई यात्रा के दौरान देश के दुनियां के विभिन्न हिस्सों से आये रोटेरियन से मुलाकात हुई और वे किस प्रकार से मानव सेवा में योगदान दे रहे हैं उसकी वृहद जानकारी हुई। इस यात्रा में कुल 170 भारतीय रोटेरियन शामिल हुये। बस्ती जनपद से डा. वी.के. वर्मा और राजेश्वरी देवी को प्रतिनिधित्व का अवसर मिला। डा. वी.के. वर्मा ने कहा कि इस यात्रा से काफी कुछ सीखने को मिला। डा. वी.के. वर्मा और राजेश्वरी देवी का फूल मालाओं के साथ स्वागत करने वालों में रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर किशन कुमार गोयल, क्लब अध्यक्ष, प्रतिभा गोयल, अशोक कुमार शुक्ल, राम दयाल चौधरी, डा श्याम नरायन चौधरी आदि शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 18 फरवरी 2024 रविवार

सम्पादकीय

अमेरिका में निशाने पर भारतीय छात्र

भले ही लाखों भारतीय युवाओं के लिये अमेरिका एक सुनहरे सपनों का देश हो, लेकिन नये साल की शुरुआत में पांच प्रतिभावान भारतीय छात्रों की मौत बताती है कि वहां जमीनी हकीकत खासी कंटीली है। अपनी मेधा–परिश्रम के बूते अपनी विशिष्ट जगह बनाते भारतीय युवा उन काहिल अमेरिकी युवाओं की आंख की किरकिरी बने हुए हैं जिन्हें लगता है कि भारतीय युवा उनकी जगह ले रहे हैं। दरअसल, इस सोच को दक्षिणपंथी राष्ट्रपति रहे डोनाल्ड ट्रंप ने हवा दी। डोनाल्ड ट्रंप तो युवाओं का राजनीतिक दोहन करके चले गए लेकिन पथभ्रष्ट अमेरिकी सफलता की नई इबारत लिख रहे युवा भारतीयों को निशाना बना रहे हैं। हालात कई भारतीय छात्रों के स्वप्नों का अमेरिका में दुरूस्वप्न बनाया जा रहा है। फरवरी के पहले सप्ताह में शिकागो में एक भारतीय युवा को अज्ञात हमलावरों ने निशाना बनाया। इससे पहले एमबीए की डिग्री हासिल करने वाले विवेक सैनी की लिथोनिया में पीट–पीटकर हत्या कर दी गई। इंडियाना में समीर कामत पिछले सप्ताह मृत पाए गए। एक अन्य छात्र नील आचार्य लापता हुए, बाद में उनकी मृत्यु होने की पुष्टि हुई। वहीं एक युवा अकुल धवन, जो इलिनोइस विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था, पिछले माह मृत पाया गया। इसी तरह श्रेयस रेड्डी की मौत की खबर कुछ सप्ताह पूर्व आई। निश्चय ही ये हत्याएं उन छात्रों को व्यथित करने वाली हैं जो अमेरिका में अपने सपनों का संसार देखते हैं। निस्संदेह, ये घटनाएं उन मां–बाप के लिये दुखदायी हैं जो अपने चल–अचल संपत्ति बेचकर या जीवन की सारी पूंजी लगाकर अपने बच्चों का भविष्य संवारने अमेरिका भेजते हैं। ये बच्चे नस्लवादी व नशेड़ियों की हिंसा का शिकार बन रहे हैं। आज एक प्रतिशत भारतीय अमेरिकी अर्थव्यवस्था में छह फीसदी आयकर दे रहे हैं। उनकी संपन्नता कुछ अमेरिकियों की आंख में खटकती है। दरअसल, अमेरिका में बेरोजगारी काफी है और अपनी अयोग्यता के चलते भारतीय छात्रों का मुकाबला नहीं कर पाते। यह दुराग्रह उन्हें कालांतर में हिंसक बनाता है।

दरअसल, केवल अमेरिकी युवा ही नहीं, अमेरिकी पुलिस भी नस्लवाद मुक्त नहीं है। एक भारतीय छात्रा की सड़क दुर्घटना में हुई मौत पर संवेदनहीन टिप्पणी करता एक पुलिसवाला पिछले दिनों सुर्खियों में था। सारी दुनिया में मानवाधिकारों व सांप्रदायिक सौहार्द की ठेकेदारी करने वाला अमेरिकी प्रशासन भी इस दिशा में गंभीर नजर नहीं आता। रोजगार के अवसरों की कमी के चलते उत्पन्न असंतोष की वजह से बड़ी संख्या में अमेरिकी युवा नशे और अपराध की दुनिया में उतर रहे हैं। यह दुखद ही है कि पिछले एक साल में अमेरिका में रह रहे पांच सौ बीस भारतीय मूल के लोगों के साथ नस्वीय हिंसा की घटनाएं हुई हैं जो पिछले साल के मुकाबले में चालीस फीसदी अधिक हैं। हिंसा की चपेट में केवल छात्र ही नहीं हैं बल्कि वहां नौकरी कर रहे और वहां बस चुके लोग भी शामिल हैं। दरअसल, पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सार्वजनिक टिप्पणी की थी कि भारतीय युवा अमेरिकी युवाओं का हक छीन रहे हैं। उनका दावा था कि सत्ता में आने पर वे उनका हक दिलवाएंगे। यही वजह है कि दक्षिणपंथी ट्रंप को आज भी अधिक अमेरिकी युवाओं का समर्थन मिल रहा है। दक्षिणपंथी अमेरिकियों को इस बात से भी परेशानी है कि बाइडन प्रशासन भारतीय मूल के लोगों को अधिक तरजीह दे रहा है। आंकड़े बता रहे हैं कि बाइडन सरकार ने सवा सौ से अधिक महत्वपूर्ण पदों पर भारतीय मूल के लोगों की नियुक्ति की है। यहां तक कि आज अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस भी भारतीय मूल की हैं। निस्संदेह, ऐसी स्थिति में भारतीय समुदाय के लोगों और राजनयिक कर्मचारियों को छात्रों तक पहुंचाने और उनकी समस्याओं को दूर करने के लिये अतिरिक्त प्रयास करने होंगे। उन्हें समयबद्ध तरीके से जांच करवाने के लिये कानून प्रवर्तन एजेंसियों पर भी दबाव बनाने का प्रयास करना चाहिए। भारतीय छात्रों को भी सचेत रहने की जरूरत है कि खुद को दुनिया का आदर्श लोकतंत्र कहने वाले अमेरिका में नस्लीय सड़ांध गहरे तक है। विडंबना यह है कि अमेरिकी मीडिया, जो भारत में छोटी–छोटी घटनाओं पर हो–हल्ला करता रहता है, घृणा के अपराधों को उजागर करने तथा भारतीय छात्रों की दशा पर खामोश रहता है।

चुनाव से पहले राजनीतिक दलों के बीच शह–मात का खेल

–ललित गर्ग –

2024 के लोकसभा चुनाव को लेकर शतरंज की बिसात बिछ रही है। कुछ ही हफ्ते बचे हैं और भारतीय जनता पार्टी एवं सभी विपक्षी दलों ने शतरंज की चालों की तरह अपनी–अपनी चालें चल रहे है। भाजपा एवं इंडिया गठबंधन दोनों ही खेमों में अब हर दिन चुनावी रणनीति को लेकर शतरंज की चालें चलते हुए एक दूसरे को मात देने का दौर चल रहा है, सब अपनी–अपनी व्यूह रचना बना रहे हैं। एक–एक मोहरे को ठीक जगह रख रहे हैं। कोई प्यादों से लड़ने की, तो कोई वजीर से लड़ने की रणनीति बना रहे हैं। कुछ प्यादे, वजीर बनने की फिराक में हैं। भाजपा ने स्वयं की 370 एवं उसके गठबंधन की 400 का लक्ष्य लेकर ही चालें चल रही है। इंडिया गठबंधन एवं विभिन्न राजनीतिक दल भी अपनी चालों को फीट करने में जुटें हैं। शतरंज की एक विशेषता है कि राजा कभी अकेले से शिकस्त नहीं खाता और यही हम आगामी चुनाव के बन रहे दृश्यों से महसूस कर रहे हैं।

राजनीति पल–पल नया आकार लेती है, इसलिये राजनीति में सही वक्त पर सही ढंग से इस्तेमाल करने का हुनर होना अपेक्षित होता है, जो अच्छा वक्त हो रहा है उसे बिगाड़ना आना चाहिए और जो बिगड़ रहा है उसे सुधारना आना चाहिए। इसी को कहते है राजनीति। इसी राजनीति के महारथि के रूप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा की रणनीति तीक्ष्ण एवं प्रभावी बनकर सामने आ रही है। शतरंज के खेल की भांति राजनीति में भी कब किस घोड़े को और किस सैनिक को ऊंट को मारना है ताकि धमाकेदार चुनाव परिणाम तक पहुंचा जा सके, ये कला आनी चाहिए। इस कला में भाजपा का कोई मुकाबला नहीं है। वह राजनीतिक शतरंज की चालों में माहिर है और उसकी दृष्टि नये बन रहे राजनीतिक जोड़–तोड़ पर लगी है। भाजपा की एक चाल के बाद विरोधी कितनी चाल चल सकता है, भाजपा के घोड़े ऊंट सैनिक को मारने के लिए विपक्षी दल क्या चाले चल सकते हैं, इस बात का भाजपा को पहले से ज्ञान है, उसे यह भी पता है कि वह कितने प्यादों को खो सकता है। उसे बचाने का खेल भाजपा खेलने लगी है।

शतरंज में सफेद मोहरों की चाल पहले होती है और हर एक चाल की वरीयता मायने रखती है। ठीक इसी सोच पर भाजपा सभी चुनावी चालों में आगे रहना चाहती हैं। पर शुरुआत किस चाल से करें, जिसकी काट नहीं हो, यह भाजपा अच्छी तरह जानती हैं। तभी उसने प्रभावी एवं दूरगामी राजनीतिक से जुड़ी पहले चलने वाली चाले चलते हुए नीतीश कुमार और जयंत चौधरी जैसे नेताओं को इंडिया गठबंधन से छीन लिया गया है। कांग्रेस के अशोक चव्हान को भाजपा में शामिल करके राज्यसभा में भेजा दिया है। मायावती और चंद्रबाबू नायडू को विपक्ष में जाने से रोक दिया गया है। शिवसेना और राकांपा की दो फाड़ कर दी गयी है। श्रीराम मन्दिर उद्घाटन से हिन्दू वोटों को प्रभावित किया गया है, वहीं पांच राजनीतिक रत्नों को 'भारत रत्न' सर्वोच्च पुरस्कार की घोषणा से आम चुनावों को प्रभावित करने का राजनीतिक कौशल दिखाते हुए शह–मात का खेल खेल रही है।

शतरंज के खेल की तरह राजनीति के खेल में भी घोड़ा ढाई घर आगे और ढाई घर पीछे चलकर मारता है, परिपक्व एवं मझे हुए राजनीतिक खिलाड़ियों एवं राजनीतिक दलों की यही चालें शुरू हो चुकी है, जिस कारण सभी विपक्षी दलों के सामने अपने अस्तित्व को बचाने का धर्म संकट है और प्रमुख दलों में भविष्य की राजनीतिक सत्ता को लेकर राजनीति की निष्ठायें पूरी तरह से धूमिल होती हुई भी दिखाई पड़ रही है। वर्तमान राजनीति सिद्धांतों पर नहीं रह गई है अब विभिन्न राजनीतिक दल येन केन प्रकरण पद और सत्ता हासिल करके सुख भोगना चाहते हैं और समाज में अपने रुतबे को कायम रखने की होड़ शुरू है। लेकिन सत्ता एवं स्वयं–स्वार्थ की इस होड़ के कारण नुकसान तो लोकतंत्र का ही हो रहा है। इसलिये आज सबकी आंखें और कान राजनीतिक दलों द्वारा प्रतिदिन लिये जाने वाले निर्णयों पर लगे हुए हैं। दोष किसी एक दल का नहीं, बल्कि उन सबका है जो चुनावी संग्राम को एक शतरंज की बिसात बना रखा है। चुनाव की घोषणा से पहले ही जो घटनाएं हो रही हैं वे शुभ का संकेत नहीं दे रही हैं। मतदाता भी धर्म संकट में है। उसके सामने अपना प्रतिनिधि चुनने का विकल्प नहीं होता। प्रत्याशियों में कोई योग्य नहीं हो तो मतदाता चयन में मजबूरी महसूस करते हैं। मत का प्रयोग न करें या न करने का कहें तो वह संविधान में प्रदत्त अधिकारों से वंचित होना करना है, जो न्यायोचित नहीं है।

काले और सफेद मोहरे शतरंज की फर्श पर ही आमने–सामने नहीं होते, पूरा चुनावी परिदृश्य ऐसे ही काले और सफेद रंगों में बंटती जा रही है। कहीं यह अगड़ों–पिछड़ों के नाम से तो कहीं वर्ग और जाति के नाम से आमने–सामने हैं। इस बार की लड़ाई कई दलों के लिए आरपार की है। श्श्अभी नहीं तो कभी नहींश्श दिल्ली के सिंहासन को छूने व लालकिले पर ध्वज की डोरी पकड़ने के लिए सबके हाथों में खुजली आ रही है। उन्हें केवल अगले चुनाव की चिन्ता है, अगली पीढ़ी की नहीं। मतदाताओं के पवित्र मत को पाने के लिए पवित्र प्रयास की सीमा लांघ रहे हैं। यह त्रासदी बुरे लोगों की चीत्कार नहीं है, भले लोगों की चुप्पी है जिसका नतीजा राष्ट्र भुगतता रहा हैश्भुगतता रहेगा, जब तब भले लोग मुखर नहीं होंगे।

शतरंज के खेल की तरह शह और मात राजनीति में भी होती है, शतरंज के खेल में घोड़ा बहुत महत्वपूर्ण होता है। भाजपा ने ऐसे ही घोड़ों को अपने पक्ष में किया हैं, ये घोड़े चारों दिशाओं में से किसी एक में आवश्यकतानुसार ढाई घर चल सकता है। यह आक्रमण में निर्णायक भूमिका निभाता है और सुरक्षा भी प्रदान करता है। इसकी चाल को समझना आवश्यक है। वैसे मंत्री या वजीर सबसे शक्तिशाली मोहरा होता है, क्योंकि यह आगे–पीछे, आरे–तिरछे, अगल–बगल अपनी मर्जी एवं सुविधा से, कई घरों तक आ–जा सकता है। वैसे खेल तो प्यादों से शुरू होता है। आगे वे ही बढ़ते हैं। आक्रमण एवं सुरक्षा, दोनों की रणनीति, उनकी चाल को ध्यान में रख कर बनाई जाती है। सबसे बड़ी बात है कि आगे बढ़ते हुए वे आवश्यकतानुसार मंत्री, घोड़ा, ऊँट, हाथी कुछ भी बन सकते हैं। उनके महत्व को कम करके नहीं देखा जा सकता। भाजपा के पास विपक्षी दलों की तुलना में ऐसे मंत्री, घोड़ा, ऊँट, हाथी सब है। जबकि विपक्षी दल अपनी कुचालों से इन सबको खोते जा रहे हैं। यह सही है कि सहयोगियों के गठबंधन छोड़ने की शुरुआत भी एनसीपी में पड़ी फूट के बाद से ही हो गई थी, लेकिन बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पलटना इस अर्थ में निर्णायक कहा जा सकता है कि वही गठबंधन के सूत्रधार की भूमिका निभा रहे थे। उन्हें अपनी ओर खींचकर भाजपा और एनडीए ने विपक्षी दलों के विशाल गठबंधन से बनते नैरेटिव को जबर्दस्त झटका दिया। इस झटके से उबरने की कोशिशें ढंग से शुरू होतीं, उससे पहले ही पश्चिम यूपी के जाट बहुल इलाके में दखल रखने वाले आरएलडी नेता जयंत चौधरी ने भी पाला बदल लिया।

निश्चित रूप से इन सब शतरंजी चालों के पीछे एनडीए की तरफ से हो रहे सुनियोजित प्रयासों की भूमिका है। लेकिन इंडिया गठबंधन खेमा जिस तरह से बिखर रहा है, उसका पूरा श्रेय एनडीए की कोशिशों को नहीं दिया जा सकता। इसकी काफी जिम्मेदारी विपक्षी दलों के नेताओं को भी अपने सिर पर लेनी होगी। विपक्षी दलों का मंच इंडिया गठबंधन पिछले साल मुश्किलों के बीच जिस तरह से बना और फिर जितनी तेजी से इसने उम्मीदें जगानी शुरू कीं, उतनी ही तेजी से उन उम्मीदों को ध्वस्त भी करता जा रहा है। भाजपा की शतरंज पर बिछी बिसात का अहम हिस्सा नंबर से आगे जाकर पूरे देश में ऐसा माहौल बनाना है जिससे लोगों में उसके लिये अधिकतम स्वीकार्यता का भाव आये। मोदी के तीसरे कार्यकाल के लिये राष्ट्रीय एकता, नया भारत, सशक्त भारत का सन्देश अहम है। राजनीतिक चारित्रिक उज्ज्वलता, ईमानदारी और नैतिकता शतरंज की चालें नहीं मानवीय मूल्य हैं। अतः नीति ही राजा, नीति ही मोहरें और नीति ही चालें हो।–(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं स्तम्भकार हैं)

मध्यपूर्व में सांस्कृतिक कूटनीति का विस्तार

–पुष्परंजन–

प्रधानमंत्री मोदी के लिए अब नया टास्क सामने है, अरब देशों में हिंदू धर्म का विस्तार। आइडिया सुनकर चौंकिये नहीं। इसकी शुरुआत उन्होंने अबू धाबी से कर दी है। अब तक भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लाम के विस्तार में सबसे अधिक दिलचस्पी सऊदी अरब की रही है, अब यह गंगा उल्टी बह रही है। विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और स्वयं प्रधानमंत्री मोदी चुनाव के बाद इस भगीरथ प्रयास में लग जाएं, तो कुछ नया नैरेटिव गढ़ने की संभावना बनती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने विस्तार के वास्ते पूरे मिडिल ईस्ट में सबसे अधिक ध्यान यूएई में केंद्रित किया है।

पिछले कुछ वर्षों से सर संघ चालक मोहन भागवत यूएई बेस्ड एनएमसी ग्रुप ऑफ कंपनीज के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. बीआर शेट्टी के संपर्क में रहे हैं। जनवरी, 2016 में मोहन भागवत की मुलाकात बीआर शेट्टी से कोच्चि के अलूवा स्थित तंत्रा विद्यापीठम में कराई गई थी। इस मुलाकात का मूल उद्देश्य मिडिल ईस्ट में हिंदू धर्म का विस्तार करना था, जिसका अधिकेंद्र यूएई को बनाने की वजह वहां का सर्वधर्म समभाव वाला उदार कानून भी है।

संघ प्रमुख मोहन भागवत यूएई के दूसरे बिजनेस टायकून सुधीर कुमार शेट्टी (प्रेसिडेंट यूएई एक्सचेंज), एन. बालाकृष्णा (चेयरमैन प्राकृति नेस्ट बिल्डर्स), अनिल पिल्लई (दुबई बेस्ड जेआर एयरोलिंक के एमडी), प्रमोद (यूएई एक्सचेंज के सीओओ), प्रशांत मंगत (एनएमसी ग्रुप के सीओओ) से समय–समय पर इस प्रोजेक्ट को खाद–पानी देने के वास्ते मिलते रहे। यूएई समेत मिडिल ईस्ट के देशों में मुश्किल यह है कि आप सार्वजनिक रूप से संघ की शाखा का आयोजन नहीं कर सकते। बंद कमरे में अपनी आस्था का विस्तार कीजिए, इतनी छूट कुछ देशों में है।

सऊदी अरब में हिंदू धर्म तीसरा सबसे बड़ा धर्म है, देश की कुल आबादी का लगभग 1.3 प्रतिशत इसका अनुसरण करता है। वर्ष 2020 तक सऊदी अरब में लगभग 7 लाख 8,000 हिंदू रहते थे, जिनमें से अधिकांश भारतीय और नेपाली थे। सऊदी अरब में भारतीयों का बड़े पैमाने पर प्रवासन हुआ है, साथ ही हिंदुओं की संख्या में भी तेजी से वृद्धि देखी जा रही है। गल्फ देशों में भारतीय सबसे पहले ओमान में रहने आए, बस्तियां बनाईं और हिंदू धर्म का पालन किया।

ओमान की राजधानी मस्कट में हिंदू धर्म पहली बार 1507 में कच्छ से आया था। मूल हिंदू कच्छी बोलते थे। 19वीं सदी की शुरुआत तक ओमान में कम से कम 4,000 हिंदू थे। 1895 में मस्कट में हिंदू कॉलोनी पर इबादियों का हमला हुआ। 1900 आते–आते उनकी संख्या घटकर 300 रह गई थी। आजादी के समय तक ओमान में केवल कुछ दर्जन हिंदू ही बचे थे। अल–वलजत और अल–बानयान के ऐतिहासिक हिंदू क्वार्टरों पर अब हिंदुओं का कब्जा नहीं है। वो बीते दिनों की बात बनकर रह गये। सबसे आप्रवासियों में विसूमल दामोदर गांधी (औलाद कारा), खिमजी रामदास, इनजी मोरारजी, रतनसी पुरुषोत्तम और पुरुषोत्तम टोपरानी के खानदान वाले हैं। एकमात्र हिंदू श्मशान मस्कट के उत्तर–पश्चिम में सोहर में स्थित है।

वर्ष 2010 में पीईडब्ल्यू रिसर्च सेंटर ने अनुमान लगाया कि अमीरात की कुल आबादी का 76.9 प्रतिशत मुस्लिम, 12.6 प्रतिशत ईसाई, 6.6 प्रतिशत हिंदू और 2 प्रतिशत बौद्ध और बाकी अन्य धर्मावलबी थे। वर्ष 2020 में बोस्टन विश्वविद्यालय के विश्व धर्म डेटाबेस के अनुसार, यूएई की जनसंख्या में लगभग 125,000 नास्तिक, 72,000 सिख और 49,000 बहाई शामिल हैं। पिछले 14 वर्षों में यह जनसंख्या कितनी बढ़ी है, इसका अपडेट नहीं आया है।

वर्ष 2001 में बेल्जियम के स्पेलोलॉजिस्टों ने यमन के सोकोट्रा द्वीप पर बड़ी संख्या में शिलालेख, चित्र और पुरातात्विक वस्तुओं की खोज की, जो नाविकों द्वारा छोड़े गए थे। उससे पता चला कि ईसा पूर्व पहली शताब्दी से छठी शताब्दी तक भारतवंशियों ने इस द्वीप का दौरा किया था। उस समय जो ग्रंथ पाए गए, अधिकांश ब्राह्मी लिपि में लिखे गए थे। इतिहास के पन्ने बताते हैं कि 6वीं शताब्दी में अरब व्यापारी केरल में बस गए थे। मध्ययुगीन गुजरातियों, कच्छियों, आंध्र, तमिल, कर्नाटक के व्यापारियों ने अरब व सोमाली बंदरगाहों के साथ बड़े पैमाने पर व्यापार किया, जिनमें होर्मुज, सलालाह, सोकोत्रा, मोगादिशु, मर्का, बरवा, होब्यो, मस्कट और अदन शामिल थे। ब्रिटिश साम्राज्य के कालखंड में सेना या सिविल सेवा में कई भारतीय सूडान जैसे अरब देशों में तैनात थे।

दुर्भाग्यवश 1970 के बाद मबाद अल बनयान और बेयत अल पीर में स्थित हिंदू मंदिर दिखे नहीं। आज एकमात्र सक्रिय हिंदू मंदिर मस्कट में शिव मंदिर परिसर (जिसे स्थानीय रूप से मोतीश्वर मंदिर के रूप में जाना जाता है), और दरसैट में स्थित कृष्ण मंदिर हैं। संयुक्त अरब अमीरात के तीन सबसे बड़े शहर– अबू धाबी, दुबई और शारजाह भारतीय आप्रवासियों के गढ़ हैं। अनुमानित 20 लाख भारतीय प्रवासियों में से 10 लाख केरल से, और लगभग साढ़े चार लाख तमिलनाडु से हैं, बाकी अन्य प्रांतों से हैं।

यह कहना गलत और भ्रामक है कि 2024 में पहली बार यूएई में हिंदू मंदिर का उद्घाटन हुआ। बल्कि, यह कह सकते हैं कि अबू धाबी स्थित बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण (बीएपीएस संस्था) का संयुक्त अरब अमीरात में पहला हिंदू मंदिर है। जुलाई, 2013 में टाइम्स ऑफ इंडिया ने 'बीएपीएस' के एक सूत्र के हवाले से जानकारी दी कि एक मुस्लिम व्यवसायी ने अबू धाबी में बीएपीएस मंदिर निर्माण के लिए पांच एकड़ जमीन दान में दी थी। सूत्र के मुताबिक, यह कदम तब उठाया गया जब 'बीएपीएस' के एक टॉप प्रतिनिधि ने दुबई स्थित इन्वेस्ट एडी ग्रुप के निमंत्रण पर यूएई की यात्रा की थी। यह नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के साल भर पहले की बात है।

ठीक से पड़ताल करें तो यूएई के दुबई में 1958 में हिंदू मंदिर बनाने की अनुमति दी गई, जिसमें शिव मंदिर, कृष्ण मंदिर और गुरुद्वारा शामिल थे। जनवरी, 2024 में दुबई के जेबेल अली में एक नया हिंदू मंदिर खोला गया और मौजूदा शिव मंदिर और गुरुद्वारा को इस नए स्थान पर स्थानांतरित कर दिया गया। कृष्ण मंदिर अभी भी बर दुबई में मूल परिसर में स्थित है। बहरीन में श्रीनाथजी का एक मंदिर है।

संयुक्त अरब अमीरात, सात अमीरातों का एक संघ है, जो लगभग 26 लाख भारतीय प्रवासियों का घर जैसा है। यह यूएई की कुल आबादी का एक तिहाई है, स्थानीय अमीराती आबादी से अधिक। संयुक्त अरब अमीरात में रहने वाले अधिकांश हिंदू अपने घरों के भीतर ही अपने धर्म का पालन करते हैं। अबू धाबी में जिस बीएपीएस हिंदू मंदिर का शिलान्यास अप्रैल, 2019 में हुआ था, उसका उद्घाटन पीएम मोदी ने बुधवार 14 फरवरी, 2024 को किया है।

–लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

क्या हो पारदर्शी चंदे का विकल्प

–उमेश चतुर्वेदी–

पांच साल पहले जिस चुनावी बॉन्ड को चुनावी फंडिंग में पारदर्शिता लाने और चुनावों में कालाधन के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए लाया गया था, देश की सबसे बड़ी अदालत ने उसे अवैधानिक घोषित करते हुए उस पर रोक लगा दी है। दरअसल, चुनावी बॉन्ड के विरोधियों को उसे लेकर सबसे बड़ी आपत्ति यह थी कि बॉन्ड के जरिए राजनीतिक दलों को दान देने वाले लोगों के नाम का खुलासा नहीं हो रहा था। वैसे चुनावी बॉन्ड की अधिसूचना इसके लिए दानदाता को अपनी गोपनीयता की सहूलियत देती थी। चुनावी बॉन्ड को देने वाले का नाम सूचना के अधिकार के दायरे से भी बाहर था। ऐसे में आरोप लगता था कि चुनावी बॉन्ड के जरिए राजनीतिक दलों को चंदा देने वाले राजनीतिक दल दरअसल बॉन्ड के रूप में रिश्वत दे रहे हैं और अपने कारोबारी या औद्योगिक हितों के लिहाज से बदले में सत्ताधारी दल से सहूलियती नीतियां बनवा रहे हैं।

गांधीजी ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान आम लोगों से चंदा लेने की शुरुआत की। हालांकि, उस दौर में भी बिरला और बजाज जैसे औद्योगिक घराने कांग्रेस के बड़े दानदाता थे। लेकिन आम लोगों से चंदा लेने के पीछे भावना यह थी कि लोग इसके जरिए आंदोलन से तो जुड़ेंगे ही, उनका नैतिक दबाव आंदोलन कर रही कांग्रेस पर भी रहेगा। इसलिए वह लोकविरोधी फैसले नहीं ले पाएगी। आजादी के बाद भी राजनीतिक दल आम लोगों के जरिए ही धन जुटाते थे। लेकिन जैसे–जैसे भारत में औद्योगीकरण बढ़ता गया, औद्योगिक घराने भी चुनावी चंदा देने में आगे रहने लगे। निश्चित तौर पर इसका सबसे ज्यादा फायदा सत्ताधारी दलों को ही हुआ। एक दौर में कांग्रेस को सबसे ज्यादा चुनावी चंदा मिलता रहा।

कहा गया कि इसके जरिए सबसे ज्यादा दान भाजपा को मिला है। इसे आजादी के बाद से ही जारी परिपाटी का विस्तार कहा जा सकता है। 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' के मुताबिक विगत पांच वर्षों में चुनावी बॉन्ड के जरिए सबसे ज्यादा 6566 करोड़ का दान भाजपा को मिला है। दूसरे नंबर पर कांग्रेस है, जिसे एक हजार 123 करोड़ का दान मिला। तीसरे नंबर पर तृणमूल कांग्रेस है, जिसे एक हजार 93 करोड़ की रकम मिली। वहीं 774 करोड़ रुपये बीजू जनता दल व डीएमके को 617 करोड़ मिले हैं। जाहिर है कि जिसके पास जितनी सत्ता है, उसी अनुपात में उसे चंदा मिला है।

निस्संदेह, चुनावी परिदृश्य में राजनीति शाहखर्ची का पेशा हो गया है। अकूत धन के बिना चुनाव लड़ना और राजनीतिक दल चलाना आसान नहीं है। शायद इसीलिए अब चुनावी प्रचार अभियान के लिए मीडिया ने कार्पोरेट बांबिंग का विशेषण दिया है। जाहिर है कि यह खर्च कारोबारी और औद्योगिक घरानों से ही आ सकता है। आम लोग से मिलने वाले चंदे या दान से राजनीति करना आज के दौर में मुश्किल है। यही वजह है कि चुनावों में काले धन का इस्तेमाल बढ़ा। चुनाव आयोग की तमाम सख्ती के बावजूद अब भी चुनावों में काले धन का भरपूर इस्तेमाल होता है। जाहिर है कि जो चुनावी चंदा देगा, वह अपने हित की बात तो करेगा ही। चुनावी बॉन्ड को खारिज किए जाने के बाद गैर–भाजपा दलों ने भाजपा को कटघरे में खड़े करने की कोशिश जरूर की है। लेकिन सवाल यह है कि क्या उनके हाथ पाक साफ हैं? सवाल यह भी है कि क्या वे अगर भाजपा की तरह प्रभावी होते और सत्ता में उनकी हनक होती तो क्या वे आम लोगों के चंदे के आधार पर ही अपनी राजनीति करते?

दूसरे की जगह परीक्षा देते एक युवक पकड़ा गया, मुकदमा दर्ज

संवाददाता–देवरिया। आरक्षी नागरिक पुलिस भर्ती परीक्षा में एसएसबीएल इंटर कालेज देवरिया परीक्षा केंद्र पर दूसरे के स्थान पर परीक्षा दे रहा युवक पकड़ा गया। पुलिस ने युवक को हिरासत में लेकर केंद्र व्यवस्थापक की तहरीर पर केस दर्ज कर लिया है। परीक्षा केंद्र पर अजीत साहनी पुत्र रामलक्षन साहनी निवासी नगवा खास थाना एकौना जनपद देवरिया के स्थान पर चन्द्रभूषण सिंह पुत्र विनय सिंह निवासी कासिम बाजार (ब्रम्ह स्थान) थाना कासिम बाजार जनपद मुंगेर, बिहार परीक्षा दे रहा था। इसका खुलासा बायोमेट्रिक जांच में हुआ। केंद्र व्यवस्थापक ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस गिरफ्तार करते हुए केंद्र व्यवस्थापक अशोक कुमार चौहान की तहरीर के आधार पर थाना कोतवाली में धारा 419, 420, 467, 468, 471, 120 भादसं 4/10 परीक्षा अधिनियम 1982 के तहत केस दर्ज किया है।

स्कूटी सवार युवकों को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर, एक की मौत

संवाददाता–देवरिया। रामजानकी मार्ग पर बरहज थाना क्षेत्र के रागरगंज के निकट शुक्रवार की रात करीब 11 बजे स्कूटी में अज्ञात वाहन ने ठोकर मार दिया। घटना में एक युवक की मौत हो गई, जबकि एक गंभीर रूप से घायल हो गया।

ग्राम पैना निवासी आनंद मोहन सिंह 27 पुत्र स्व जयप्रकाश सिंह व संदीप सिंह 26 पुत्र शिवाजी सिंह स्कूटी से घर जा रहे थे। अभी वे पैना रोड स्थित कान्हा हाउस के पास पहुंचे ही थे कि पैना की तरफ से आ रहे एक अज्ञात वाहन ने स्कूटी को टक्कर मार दिया। घटना में तरह घायल हो गए।

मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को सीचसी बरहज पहुंचाया। दोनों की हालत गंभीर देख चिकित्सक ने इलाज के लिए महर्षि देवरहा बाबा मेडिकल कालेज देवरिया रेफर कर दिया। मेंडिकल कालेज में चिकित्सक ने आनंद मोहन सिंह को मृत घोषित कर दिया। संदीप सिंह का इलाज मेडिकल कालेज में चल रहा है।

आरोग्य मेले में 304 पशुओं का किया गया इलाज

संवाददाता–गोण्डा। पशुपालन विभाग द्वारा शनिवार को पैड़ीवरा ग्राम पंचायत में पं दीन दयाल उपाध्याय आरोग्य पशु मेला का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि भवानी भीख शुक्ला और प्रधान संघ के जिला अध्यक्ष उमापति त्रिपाठी ने संयुक्त रूप से किया। पशु चिकित्साधिकारी डा शिव प्रकाश मौर्य ने विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। मेले में मुख्यमंत्री सहभागिता योजना, पशुधन बीमा योजना, वर्गीकृत वीर्य द्वारा उन्नत नस्ल की बछिया प्रजनन, बीमारियों के बचाव के लिए पशुओं का टीकाकरण सहित कई योजनाओं की जानकारी दी गई। मेले में आए करीब 304 पशुओं की चिकित्सीय जांच की गई।

कार्यक्रम में डा श्याम किसन, गौरी शंकर पांडेय, पंकज चौधरी, शरद श्रीवास्तव व रविन्द्र कुमार सहित कई किसान उपस्थित रहे।

समझौता शिविर में आठ करोड़ दो लाख की रिकवरी

संवाददाता–गोण्डा। प्रथमा यूपी ग्रामीण बैंक के जिले की चार शाखाओं में लगाए गए समझौता शिविर में तकरीबन 300 किसानों को इस योजना का लाभ मिला, हालांकि इस दिन बैंक की 91 शाखाओं में इस योजना के तहत रिकवरी के लिए निर्देश जारी किए गए थे ,प्रथमा यूपी ग्रामीण बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक दीपक गुप्ता ने बताया कि बैंक के मुख्यालय के उच्च अधिकारियों के निर्देश पर जिले के सभी शाखाओं में समझौता शिविर का आयोजन किया गया। इस समझौता शिविर में मुख्य रूप से चार शाखाएं शामिल थीं जिनमें नवाबगंज, मनकापुर ,सकरौरा और मोतीगंज। उन्होंने बताया कि इन सभी शाखाओं ने मिलकर एक ही दिन में किसानों कोई योजना की जानकारी देकर उनसे आठ करोड़ दो लाख रुपए की वसूली करके बैंक ने रिकॉर्ड बना दिया क्षेत्रीय प्रबंधक ने बताया कि इस समझौता शिविर का लाभ अधिक से अधिक किसानों को मिले, इसके लिए पहले से ही किसानों को इसके लिए जागरूक किया जा रहा है। जगह–जगह कर्मचारियों को लगाकर योजना की बराबर जानकारी दी गई थी जिससे किसानों ने शिविर में अधिक संख्या में पहुंचकर योजना का लाभ उठाया। क्षेत्रीय प्रबंधक ने यह भी बताया कि जिन किसानों का खाता एनपीए हो गया है, बैंक के संबंधित शाखा के प्रबंधक किसानों से मिलकर बराबर जानकारी दे रहे हैं ।

अपर एसडीएम की बोलेरो ने बाइक सवार दलित युवक को रौंदा, मौत

संवाददाता–बलरामपुर। अपर एसडीएम की तेज रफ्तार बोलेरो ने बाइक सवार दलित युवक को रौंद दिया। गंभीर रूप से घायल युवक ने थोड़ी देर बाद घटना स्थल पर ही दम तोड़ दिया। प्रत्यक्षदर्शियों का आरोप है कि बोलेरो में सवार अपर एसडीएम ने घायल व्यक्ति को अस्पताल तक नहीं पहुंचाया। बल्कि दूसरी गाड़ी मंगवाकर चले गए। पुलिस ने बोलेरो को कब्जे में ले लिया है। दुर्घटना सामने से आ रही तेज रफ्तार बोलेरो ने बाइक को रौंद दिया। दुर्घटना के समय गाड़ी में अपर एसडीएम संतोष कुमार ओझा व एक अन्य व्यक्ति सवार थे। बोलेरो से कुचलकर बाइक चकनाचूर हो गई और सुनील कुमार गंभीर रूप से जख्मी हो गए। सुनील बुरी तरह छटपटा रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों व राहगीरों ने बोलेरो गाड़ी संख्या–यूपी 47 एस 5151 को पकड़ लिया। मौके पर मौजूद रवीन्द्र, राजेन्द्र, शिव लाल, विनोद कुमार पाल व रवीन्द्र सोनकर ने देखा कि बोलेरो में अपर एसडीएम सहित दो लोग सवार हैं। रवीन्द्र ने एंबुलेंस को फोन किया। ग्रामीणों का आरोप है कि दुर्घटना के बाद अपर एसडीएम फोन पर किसी से लगातार बात करते रहे। उन्होंने घायल सुनील का इलाज कराने के लिए एंबुलेंस नहीं बुलाया। एंबुलेंस पहुंचने के पहले ही सुनील ने दम तोड़ दिया।

फुलवरिया बाईपास ओवर ब्रिज चौराहा के निकट शुक्रवार रात करीब पौने नौ बजे हुई है। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर मामले की जांच शुरू कर दी है।

फुलवरिया विशुनापुर निवासी रवीन्द्र कुमार ने बताया कि उनके चचेरे भाई 24 वर्षीय सुनील कुमार पुत्र गुर सहाय शुक्रवार रात आठ बजे के बाद किसी आवाश्यक कार्य से बाइक से निकले थे। चौराहे के निकट

110 मदरसा शिक्षकों के अभिलेखों की जांच कर रही गठित टीम

संवाददाता–बलरामपुर। शासन से सहायता प्राप्त 25 अनुदानित मदरसा शिक्षकों के अभिलेखों का जांच होना निश्चित है। इसके लिए जिला स्तर पर अधिकारियों की अलग–अलग टीम गठित की गई हैं, जिसमें 110 शिक्षकों के अभिलेखों के जांच होने हैं। इससे मदरसा में पढ़ने वाले छात्रों की वास्तविक स्थिति एवं शिक्षकों के छात्रों के अनुपात में तैनाती का मामला उजागर हो सकता है। जिले में मदरसा में शिक्षकों की तैनाती को लेकर आए दिन शिकायतें आम बात रही हैं। मामले को शासन ने संज्ञान में लेते हुए दिसंबर 2023 से ही अनुदानित एवं गैर अनुदानित 202 मदरसा के भौतिक संसाधन एवं छात्रों की संख्या आदि की जांच चल रही है। जांच टीम मान्यता प्रमाण–पत्र में दर्ज मान्यता के स्तर, मदरसे में स्वीकृत पदों की संख्या, मदरसे में मान्यता के दौरान कमरों की स्थिति सहित वित्तीय एवं भौतिक संसाधनों की जांच टीम कर रही है। जिले में शिक्षकों का पद स्वीकृत व कार्यरत को लेकर चल रहे हैं 110 मदरसा शिक्षकों के दस्तावेजों की जांच पड़ताल की जा रही है। जांच टीम में एक खंड शिक्षाधिकारी व जिला अल्प संख्यक कल्याण अधिकारी के साथ एक जिला स्तरीय अधिकारी भी शामिल हैं। जिला अल्पसंख्यक अधिकारी यशवंत कुमार मौर्य ने बताया है कि मदरसा के भौतिक संसाधनों की जांच का कार्य जारी है। शीघ्र ही जांच रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को भेज दी जाएगी।

विद्युत विभाग के कंप्यूटर आपरेटर को दबंग ने लात घुसो से जमकर पीटा, वीडियो हुआ वायरल

संवाददाता–गोण्डा। विद्युत विभाग में सहायक अभियंता कार्यालय पर तैनात कंप्यूटर ऑपरेटर गौरव शुक्ला अपने ऑफिस में विभागीय काम निपटा रहा था। इसी बीच विद्युत विच्छेदन मामले को लेकर पहुंचे एक दबंग युवक ने कंप्यूटर ऑपरेटर से बिना कोई बातचीत किए 57 सेकंड तक लगातार लात घुसा और कुर्सियां बरसा दी। उसके बाद मौके से फरार हो गया। वीडियो में उसके साथ एक और युवक दिखाई पड़ रहा है। जिले के अंबेडकर चौराहा स्थित विद्युत उपकेंद्र पर मारपीट का 57 सेकंड का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में कंप्यूटर कक्ष में दो युवक दरवाजा खोलकर एक साथ घुसते है। जिसमें से एक युवक कक्ष में प्रवेश करते ही कंप्यूटर ऑपरेटर गौरव शुक्ला पर ताबड़तोड़ लात घुसा से पिटाई शुरू कर देता है। जब इतने से उसका गुस्सा शांत नहीं होता है। तो वह कुर्सी उठाकर मारने लगता है। इतने में कंप्यूटर ऑपरेटर जमीन में गिर जाता है। उसके बाद दबंग पैर से प्रहार करने लगता है। 57 सेकंड तक धुआंधार फाइटिंग का यह वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। कंप्यूटर ऑपरेटर ने इसकी लिखित शिकायत नगर कोतवाली में किया है। पुलिस को दिए गए शिकायती पत्र में उसने कहा है कि 16 फरवरी की करीब चार से पांच के बीच में अपने कार्यालय में वह विभागीय काम कर रहा था। इसी बीच पारिजात सिंह पुत्र सुरेंद्र पाल सिंह और एक अन्य उसके पास पहुंचता है। इसके बाद वह व्यक्ति विद्युत विच्छेदन के विषय में बातचीत करने लगता है। जैसे ही कंप्यूटर ऑपरेटर यह कहता है कि यह काम उसके स्तर का नहीं है इसके लिए आपको सहायक अभियंता से मिलना पड़ेगा। इतना सुनते ही वह आग बबूला हो जाता है। और लात घुसो से ताबड़तोड़ कर्मचारी की पिटाई करने लगता है। पीड़ित के प्रार्थना पत्र पर नगर कोतवाली पुलिस ने प्रार्थना पत्र मिलने के बाद जांच पड़ताल शुरू कर दी है।

रोजगार मेले में रोजगार के लिए 39 युवाओं का चयन

संवाददाता–गोण्डा। विकास खंड परिसर में शनिवार को दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत द्वितीय चरण के रोजगार मेले का आयोजन किया गया। रोजगार मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख जगदेव चौधरी ने किया।इसमें हिस्सेदारी के लिए 110 युवाओं ने पंजीकरण कराया था।जिसमे आठ विभिन्न कंपनियों के प्रतिनिधियों ने 39 युवाओं को रोजगार के लिए चयनित किया गया।

मेले में यजाकी इंडिया, ग्रेट रिसोर्स प्राइवेट लिमटेड, वर्ल्ड मोबाइल सर्विस प्राइवेट लिमटेड, ब्राइट फ्यूचर प्राइवेट लिमटेड, एस एस प्राइवेट लिमिटेड, इन्टास प्राइवेट लिमटेड, इंटस बायोटेक हेल्थ केयर, लियो लाइट प्राइवेट लिमटेड कंपनियों के प्रतिनिधियों ने विभिन्न रिक्तियों के सापेक्ष 39 युवाओं का साक्षात्कार कर चयन किया ।जिसमे चयनित युवाओं को विभिन्न कंपनी में सेवायोजित कराया गया। इस अवसर पर एडीओ आईएसबी विष्णु कुमार प्रजापति, जिला कौशल प्रबंधक दीपक खरे, रवि कुमार, पवन शुक्ल, फैज रजा सिद्दीकी, राजेश तिवारी, शमशुद्दीन आदि तमाम लोग मौजूद रहे।

मैनेजर ने हेराफेरी कर हड़पे 11.95 लाख, खुली पोल मचा हड़कंप

संवाददाता–गोण्डा। जिले के परसपुर थाना के कस्बा बसंतपुर स्थित शिवादीप आटो फ्यूल सेन्टर के मैनेजर ने अमानत में खयानत करते हुए 11.95 लाख रुपये हड़पने का मामला प्रकाश में आया है। पंप मालिक ने जब अभिलेखों की जांच पड़ताल की तो मैनेजर को करतूत की पोल खुल गई। पोल खुलते ही मैनेजर मौका पाकर भाग निकला। पीडित पंप मालिक ने आरोपी मैनेजर को खिलाफ थाने में धोखाधड़ी समेत विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया है। वहीं पुलिस मामले की गहनता से छानबीन करते हुए आरोपी मैनेजर की तलाश में जुटी है। तरबगंज थाना क्षेत्र के भिखारीपुर कला गांव के रहने वाले श्याम सुन्दर सिंह सेवानिवृत्त सैनिक हैं। परसपुर–कर्नलगंज मार्ग पर बसंतपुर शिवादीप आटो फ्यूल सेन्टर के नाम से उनका पेट्रोल पंप है। स्वास्थ्य कारणों के चलते उन्होने पंप की जिम्मेदारी अपने रिश्तेदार अजय सिंह निवासी चौहानपुरवा लिलोई कलां थाना उमरी बेगमगंज को सौंप रखी है। अजय सिंह चौहान का कहना है कि उन्होंने बसंतपुर आटा थाना परसपुर निवासी राधेश्याम प्रजापति को पंप पर सेल्स मैनेजर के रूप में नियुक्त किया था। पूरे पंप के हिसाब किताब की जिम्मेदारी उसी के पास थी। इस दौरान उसने अभिलेखों में हेरफेर करते हुए 11.95 लाख रुपये का गबन कर लिया। जब उन्होने अभिलेखों की जांच पड़ताल की तो पता चला कि मैनेजर राधेश्याम ने अक्टूबर 2022 से अब तक 11.95 लाख रुपये का हेरफेर किया है। जब इस संबंध में उन्होने राधेश्याम से पूछताछ की तो उसने अपनी गलती स्वीकार करते हुए उन्हें पूरी धनराशि का चेक दे दिया। अजय का कहना है कि जब उन्होने बैंक में चेक लगाया तो वह बाउंस हो गया। इस दौरान मौका पाकर मैनेजर राधेश्याम भाग निकला। मामले में अजय सिंह ने आरोपी मैनेजर के खिलाफ धोखाधड़ी समेत कई गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज करायी है। थाना प्रभारी शेषमणि पाण्डेय ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच पड़ताल की जा रही है।

पूर्व विधायक समेत 3 पर दर्ज हुआ फर्जीवाड़े सहित कई अन्य केस

संवाददाता–देवरिया। इसके बाद उन्होंने ने रुद्रपुर कोतवाली में पूर्व विधायक सुरेश तिवारी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने के लिए प्रार्थना पत्र दिया। इस पर पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पीड़ित शिक्षक ने कोर्ट की शरण ली। कोर्ट ने आरोपियों पर मुकदमा दर्ज करने का निर्देश दिया है। जिले के रुद्रपुर विधानसभा क्षेत्र से बसपा के विधायक और बीजेपी के टिकट पर बरहज से विधायक रहे सुरेश तिवारी, उनकी बेटी और सहयोगी पर कोर्ट के आदेश पर मुकदमा दर्ज हुआ है। यह मुकदमा महाविद्यालय से मानदेय शिक्षक को निकाले जाने, कूट रचना करने, मारपीट और धमकी देने के मामले में दर्ज हुआ है। जिले के रुद्रपुर कोतवाली क्षेत्र के गोधेश्वर नाथ वार्ड निवासी डॉ. देवेश नारायण शुक्ल क्षेत्र के ही रनिहवा स्थित लगना देवी तारकांत महाविद्यालय में संस्कृत के मानदेय शिक्षक थे। कोर्ट में दिए गए प्रार्थना पत्र के अनुसार 20 अप्रैल 2013 को उनकी नियुक्ति हुई। 4 फरवरी 2021 को महाविद्यालय के एक कर्मचारी ने फोन कर कहा कि उनकी सेवा समाप्त कर दी गई है। इसी बीच महाविद्यालय द्वारा संस्कृत शिक्षक के लिए विज्ञापन भी निकाल दिया गया। विश्वविद्यालय के संबद्धता विभाग में पता करने बताया गया कि महाविद्यालय द्वारा बताया गया था कि संस्कृत शिक्षक ने त्याग पत्र दे दिया है। डॉ. देवेश नारायण शुक्ल ने त्यागपत्र के हस्ताक्षर को झूठा बताया। जांच के दौरान हस्ताक्षर कूट रचित पाया गया। इसके बाद उन्होंने ने रुद्रपुर कोतवाली में पूर्व विधायक सुरेश तिवारी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराने के लिए प्रार्थना पत्र दिया। इस पर पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पीड़ित शिक्षक ने कोर्ट की शरण ली। कोर्ट ने आरोपियों पर मुकदमा दर्ज करने का निर्देश दिया है। रूद्रपुर कोतवाल ने रतन कुमार पांडेय ने बताया कि पूर्व विधायक सुरेश तिवारी, कॉलेज प्रबंधक उनकी पुत्री ममता पांडेय और सहयोगी कामेश्वर पांडेय पुत्र सच्चिदानंद पांडेय के खिलाफ आईपीसी की धारा 419,420,467,468,471,120 बी,406,504 और 506 में मुकदमा दर्ज किया गया है।

31 मार्च तक जिले में लागू रहेगी धारा 144

संवाददाता–श्रावस्ती। आगामी त्योहारों व बोर्ड परीक्षा के चलते जिले में धारा 144 लागू किया गया है। जो 31 मार्च तक लागू रहेगी। इस दौरान लोगों को समूह में इकट्ठा होने व और न ही किसी भी प्रकार के हथियार को अपने पास रखने की अनुमति नहीं होगी।

अपर जिला मजिस्ट्रेट अमरेन्द्र कुमार वर्मा ने बताया कि आगमी दिनों में विभिन्न त्योहार होंगे। 24 फरवरी को संत रविदास जयंती, 26 फरवरी को शबेबारात, आठ मार्च को गुडफ्राइडे का त्योहार मनाया जाएगा। साथ ही 22 फरवरी से नौ मार्च तक जिले में यूपी बोर्ड की परीक्षाएं होंगी। जिसे शांतिपूर्ण व्यवस्था में सम्पन्न कराने के लिए जिले में धारा 144 लागू किया गया है जो 31 मार्च तक प्रभावी रहेगा। उन्होंने बताया कि इन दिनों में कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह अपने साथ लाठी, डण्डा या किसी प्रकार का हथियार, विस्फोटक पदार्थ, शस्त्र आदि लेकर घूम नहीं सकेगा। वृद्धों, विकलांगों व बीमार व्यक्तियों को अपने साथ सहारे के लिए लाठी व डंडा रखने की अनुमति होगी। इसके अलावा कोई भी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह जिले में अफवाह फैलाएगा तो उसके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई होगी। इ वनिविस्तारण यंत्रों से ऐसा प्रचार–प्रसार नहीं किया जाएगा जिससे जातिगत, साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न हो। ध्वनि विस्तारक यंत्र जैसे लाउडस्पीकर व डीजे का प्रयोग प्रतिबंधित रहेगा। बिना उप जिला मजिस्ट्रेट के पूर्वानुमति प्राप्त किए किसी भी सार्वजनिक स्थान पर बैठक, पंचायत, रैली व नाटक मंचन नहीं होगा। परम्परागत रीति से मनाये जाने वाले आयोजनों के अलावा अन्य स्थान पर बिना पूर्वानुमति के धार्मिक जुलूस नहीं निकलेगा।

आपसी विवाद के बाद घर से निकले अधेड़ का मिला शव

संवाददाता–महराजगंज। मिठौली थानाक्षेत्र के सोहसा बांसपार गांव के बागीचे में एक अधेड़ का शव पेड़ की डाली से फंदे के सहारे लटकता मिला। मृतक की पहचान कोठीमार थानाक्षेत्र के मुजुरी विशुनपुरा गांव निवासी हीरा गुप्ता पुत्र स्व. रुदल (58) के रुप में हुई। मिठौली पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दी। सोहसा बासपार गांव के बागीचे में शव मिलने की सूचना पर मिठौली थाना के प्रभारी निरीक्षक पंकज गुप्ता पर श्यामदेउरवा थाना के प्रभारी निरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह मौके पर पहुंचे। मृतक के जेब से एक मोबाइल फोन, सुर्ती की डिब्बी व पैसा मिला। कुछ दूर पर उसकी लुंगी भी मिली। शव आम के पेड़ से प्लास्टिक की रस्सी के सहारे जमीन से कुछ ही ऊंचाई पर लटक रहा था। जांच–पड़ताल के बाद उसकी पहचान हीरा गुप्ता पुत्र स्व. रुदल के रूप में हुई। परिजनों ने बताया कि आपसी विवाद के बाद गुरुवार को हीरा घर छोड़ कर निकला था। उसके जाने के कुछ देर बाद ही पत्नी सत्ती देवी भी घर छोड़ कर निकल गई थी। मोबाइल के माध्यम से बड़े बेटे राम समुझ ने बताया कि हीरा गुप्ता के दो पुत्र रामसमुझ गुप्ता और उपेंद्र गुप्ता हैं। राम समुझ घर पर हैं और छोटा बेटा उपेंद्र किसी अन्य प्रदेश में रहकर नौकरी करता है। पिता की मौत और मां के गायब होने की बात कह कर पूरा परिवार रोने लगा। इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक मिठौली पंकज गुप्ता ने बताया कि शव की शिनाख्त के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मामले की जांच–पड़ताल की जा रही है।

पंचायत भवन पर हाजिरी लगाएंगे सफाईकर्मी

संवाददाता–गोण्डा। सफाई कर्मचारियों को अब प्रतिदिन पंचायत भवन पर हाजिरी लगाकर कार्य का विवरण देना होगा। जिसके लिए खंड विकास अधिकारी मृत्युंजय यादव ने पत्र जारी कर सभी सफाई कर्मचारियों को निर्देश दिया। शासन के निर्देश पर खंड विकास अधिकारी मृत्युंजय यादव ने सभी सफाई कर्मचारियों को राजस्व गांव में ग्रीष्म काल में सुबह 07 बजे से 11तक और शाम 03बजे से 06 बजे तक तथा शीतकाल में सुबह 08 बजे से 12 बजे तक और शाम 02 बजे से 05 तक कार्य करने का समय निर्धारित किया गया है। जिसमें प्रत्येक दिन पंचायत भवन /सचिवालय पर उपस्थिति पंजिका पर हस्ताक्षर करते हुए प्रत्येक दिन किए गए कार्य का विवरण देने का निर्देश दिया। बीड़ीओ ने बताया कि सभी सफाई कर्मचारियों को ग्रामीण हाट , मेला स्थल,पशु बाजार, एएनएम सेंटर, सामुदायिक एवं स्कूल शौचालय, विद्यालय परिसर के बाहर, खेलकूद मैदान, व्यायाम शाला, हैंड पंप, नलकूप, खलिहान, नाली , खडन्जा ,सड़क,साथ पंचायत भवन सहित सभी सार्वजनिक स्थलों की सफाई करना है इन सभी स्थानों पर गंदगी मिलने एवं ग्रामीणों की शिकायत पर संबंधित ग्राम पंचायत में तैनात सफाई कर्मचारियों के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई की जाएगी ।

रसिक पीठ के संस्थापक स्वामी करुणासिंधु महाराज को संतों ने अर्पित की श्रद्धांजलि

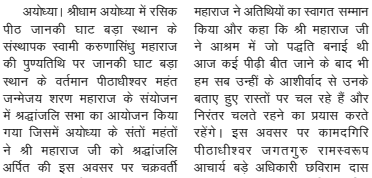

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। श्रीधाम अयोध्या में रसिक पीठ जानकी घाट बड़ा स्थान के संस्थापक स्वामी करुणासिंधु महाराज की पुण्यतिथि पर जानकी घाट बड़ा स्थान के वर्तमान पीठाधीश्वर महंत जन्मेजय शरण महाराज के संयोजन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें अयोध्या के संतों महंतों ने श्री महाराज जी को श्रद्धांजलि अर्पित की इस अवसर पर चक्रवर्ती सम्राट दशरथ जी का राजमहल बड़ा स्थान के महंत स्वामी देवेंद्रप्रसादाचार्य महाराज ने बताया कि स्वामी करुणा सिंधु महाराज संत थे हमेशा जानकी जी के भजन में लगे रहते थे और उन्होंने अयोध्या में रसिक पीठ की स्थापना की आज सैकड़ो वर्ष बीत जाने के बाद भी हम संत श्री महाराज जी को नमन करते हैं और उनके बताए हुए पद चिन्हों पर चलने का प्रयास करते हैं।

महंत जन्मेजय शरण महाराज ने अतिथियों का स्वागत सम्मान किया और कहा कि श्री महाराज जी ने आश्रम में जो पद्धति बनाई थी आज कई पीढ़ी बीत जाने के बाद भी हम सब उन्हीं के आशीर्वाद से उनके बताए हुए रास्तों पर चल रहे हैं और निरंतर चलते रहने का प्रयास करते रहेंगे। इस अवसर पर कामदगिरि पीठाधीश्वर जगतगुरु रामस्वरूप आचार्य बड़े अधिकारी छविराम दास नागा राम लखन दास डांडिया मंदिर के महंत महामंडलेश्वर गिरीश दास मंगल पीठाधीश्वर कृपालु राम भूषण दास, केशव विहार सदन महंत सच्चिदानंद दास महंत सूरज दास नागा, रामायणी रामदास दयालु महंत शिवराम शरण तीर्थ पुरोहित अध्यक्ष राजेश महाराज सैकड़ो संतों महंतों ने श्री महाराज जी को श्रद्धांजलि अर्पित की और अपनी भावांजलि उनके चरणों में समर्पित किया।

ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने जानकी ज्योति जागृति पदयात्रा को झंडी दिखाकर किए रवाना

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। मजबूत हो अवध और मिथिला की डोर इस संकल्प के साथ श्री राम जन्मभूमि अयोध्या में रामलाला का दर्शन करने के पश्चात सीता माता प्राकट्य स्थान सीतामढ़ी दर्शन करने के साथ साझी विरासत को जनजागृति मंच पालम दिल्ली के तत्वाधान में 17 फरवरी शनिवार से अयोध्या से जानकी ज्योति जागृति पदयात्रा शुरू हुई जिसका उद्देश्य राम जन्मभूमि अयोध्या से सीता जन्मभूमि पुनौराधाम सीतामढ़ी तक पैदल चलते हुए एक व्यापक लोक संपर्क अभियान चलाना है ताकि अधिक से अधिक लोग जागरूक हो सकें।

जनजागृति मंच पालम के अध्यक्ष कृष्णानन्द झा ने आज यह जानकारी देते हुए बताया कि यह यात्रा 26 दिनों की है, जिसमें प्रतिदिन पन्द्रह से 25 लोग शामिल होंगे और यात्रा करनेवाले प्रमुख लोगों मे भगवान मिश्रा प्रधान, मनोज पाठक, डाक्टर प्रदीप कुमार झा, सतीश चौहान,आनन्द कुमार, हरिशंकर तिवारी, मनोज कुमार झा सहित अन्य लोग शामिल हैं यात्रा अयोध्या के

प्रमोदवन स्थित गुजराती मन्दिर के महन्त नंद नंदनम शरण महाराज की अगुवाई में प्रातः 9 बजे श्री राम जन्मभूमि के गेट पर पहुंची जहां श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने झंडी दिखाकर यात्रा को पुनौराधाम सीतामढ़ी के लिए रवाना किया और कहा यह अपने आप में एक अनूठी यात्रा है जो अवध और मिथिला की सांस्कृतिक डोर को मजबूत करेगी और अयोध्या, सीतामढ़ी की विरासत से लोगों को जागरूक करेगी। शोभा यात्रा गाजे बजे के साथ मां सरयू के तट पर पहुंची जहां यात्रा में शामिल लोगों ने जल उठाकर संकल्प लिया और उसके बाद पहले पड़ाव मखौड़ा बस्ती के लिए रवाना हुई और यह यात्रा माता सीता के प्राकट्य स्थल सीतामढ़ी के हलेश्वर महादेव पर भी जाएगी जहां दर्शन पूजन के बाद आगे बढ़ेगी।

सरयू तट पर यात्रा का स्वागत श्री राम आश्रम के महंत जयरामदास महाराज ने संतो के साथ किया। पदयात्रा में लोगों को अनेकों स्थानों पर दर्जन पूजन का भी सौभाग्य प्राप्त होगा।

सूचना का अधिकार अधिनियम बना मजाक, नहीं दी गयी सूचना

संवाददाता–गोण्डा। सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के तहत भले ही विभागों से आम आदमी की सहूलियत के लिए जानकारी देने का प्रावधान सरकार द्वारा किया गया हो पर आज भी कुछ दबंग अधिकारी व कर्मचारी इसे महज कोरा कागज ही समझ रहे हैं। समय पर सूचना न देना उनका शगल बन गया है। अफसर भी उनके सामने बौने ही साबित हो रहे हैं।

विकासखंड बभनजोत के ग्राम पंचायत केशव नगर ग्रांट में विगत वर्षों में हुए कामों की जानकारी गांव के ही एक व्यक्ति के द्वारा ग्राम पंचायत अधिकारी से चार माह पूर्व मांगी गई थी।इसके लिए नियम अंतर्गत सभी औपचारिकताएं भी पूरी की गई थी। पीड़ित का आरोप है कि इसके लिए ग्राम पंचायत सचिव को दो बार रिमाइंडर भी दिया गया। सूचना नहीं मिलने पर अपीलीय अधिकारी एडीओ पंचायत बभनजोत से प्रथम अपील किया और बाद मे रिमाइंडर भी दिया। फिर भी सूचना नही मिलने पर खंड विकास अधिकारी से शिकायत किया, जिस पर तत्कालीन खंड विकास अधिकारी राघवेंद्र प्रताप सिंह द्वारा संबंधित पंचायत सचिव को पीड़ित को तत्काल सूचना उपलब्ध कराए जाने का निर्देश दिया गया। साथ ही जनवरी माह का वेतन सूचना नहीं देने के कारण न निर्गत करने का निर्देश दिया गया। इसी बीच खंड विकास अधिकारी का तबादला हो गया। और पंचायत सचिव द्वारा खंड विकास अधिकारी के आदेश को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया गया। आरोप लगाया कि सचिव ने सूचनाओं को उपलब्ध कराए बिना ही अपना वेतन भी निर्गत करा लिया ।

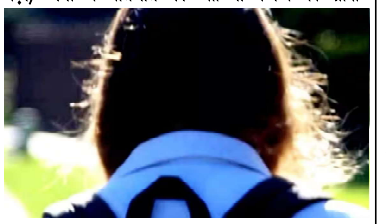

डीडीयू में रसिक मिजाज असिस्टेंट प्रोफेसर की मुश्किलें बढ़ीं, छात्रा ने बातचीत का आडियो कमेटी को सौंपा

संवाददाता–गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में यौन शोषण के आरोपों से घिरे रसिक मिजाज असिस्ध्टेंट प्रोफेसर की जांच के लिए गठित आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) को आरोप लगाने वाली छात्रा ने बातचीत का ऑडियो सौंपा है। इस मामले में आईसीसी ने आगे की जांच शुरू कर दी है। स्नातक की छात्रा का आरोप है कि 21 दिसंबर की रात नशे में ने असिस्टेंट प्रोफेसर ने उसके मोबाइल पर फोन किया। दूसरे दिन विभाग पहुंचने पर उन्होंने अभद्रता की। इसके बाद उसने विश्वविद्यालय के जिम्मेदारों से शिकायत की। लेकिन मामला दबा रहा, जब मामला समाचार पत्रों में आया तो जांच तेज हो गई। मामला को तुल पकड़ने पर कुलपति ने आरोपी शिक्षक को निलंबित कर दिया। अपनी जांच को आगे बढ़ाते हुए आंतरिक शिकायत समिति ने आरोपी शिक्षक से जवाब मांगा, शिक्षक ने भी अपना जवाब समिति को दे दिया है। डीडीयू के सीनियर प्रोफेसर पर जुलाई में लगे आरोपों की जांच पूरी हो गई है। पिछली जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट कुलपति को सौंप दी है। रिपोर्ट के अध्ययन के बाद डीडीयू प्रशासन गुण–दोष के आधार पर कार्रवाई सुनिश्चित करेगा। रसिक मिजाज प्रोफेसर की शिकायत राष्ट्रीय महिला आयोग से की गई थी। आयोग की टीम 25 जुलाई 2023 को विश्वविद्यालय पहुंच कर मामले की जांच की थी। इसकी विस्तृत जांच के लिए समिति गठित की गई थी।

खोराबार टाउनशिप एवं मेडिसिटी की अधिग्रहीत जमीन के अतिक्रमण पर चला बुलडोजर

संवाददाता–गोरखपुर। गोरखपुर विकास प्राधिकरण की परियोजना खोराबार टाउनशिप एवं मेडिसिटी में अवैध निर्माण पर बुलडोजर चला। कड़ी सुरक्षा के बीच जंगल सीकरी उर्फ खोराबार एवं सुबा बाजार की अधिग्रहीत भूमि पर किए गए अवैध निर्माण तोड़े गए। इस दौरान ग्रामीणों ने प्रतिरोध भी किया, लेकिन भारी पुलिस बल के समक्ष उनकी एक नहीं चली।

खोराबार हिन्दुस्तान संवाद के मुताबिक, दोपहर बाद गोरखपुर विकास प्राधिकरण दल–बल के साथ पहुंचा। अभियान के दौरान डॉ. अश्वनी अग्रवाल की बाउण्ड्रीवाल, सत्यवीर यादव का सीमेंट गोदाम, अनुपम जायसवाल की पौधशाला की बाउण्ड्रीवाल एवं मुर्गी फार्म की बाउण्ड्रीवाल समेत 15 एकड़ से अतिक्रमण हटाकर भूमि को खाली कराया गया। तकरीबन 2.50 एकड़ में चल रहे मुर्गी फार्म की बाउण्ड्रीवाल तोड़ दी गई। इस दौरान लगभग 400 वर्ग मीटर मे बने मुर्गी शेड को दो दिन के अंदर खाली करने का वक्त दिया गया। शेड के अतिरिक्त समस्त भूमि से अतिक्रमण हटा दिया गया है। इस भूमि के रिक्त हो जाने से खोराबार टाउनशिप में माइवान टेक्नोलाजी से निर्मित होने वाले ईडब्लूएस एवं एलआईजी भवनों का निर्माण का कार्य प्रारंभ हो जाएगा। इसके अलावा खोराबार आवासीय टाउनाशिप के लिए अधिग्रहीत लगभग 120 वर्ग मीटर रिक्त भूमि पर विनोद विश्वकर्मा की ओर से किए जा रहे पक्का मकान निर्माण को भी धवस्त किया गया। प्रभारी मुख्य अभियंता किशन सिंह के नेतृत्व में जिला प्रशासन से नामित मजिस्ट्रेट सिद्धार्थ, सहायक अभियन्ता वाद कुंज बिहारी, राज बहादुर सिंह समेत अन्य अधिकारियों और पुलिस बल एवं पीएसी की मौजूदगी में अतिक्रमण हटाया गया। आनंद वर्द्धन, उपाध्यक्ष गोरखपुर विकास प्राधिकरण ने कहा कि अतिक्रमण हटाओ अभियान के अन्तर्गत किसी भी अध यासित भवन का ध्वस्तीकरण नहीं किया गया है। खोराबार आवासीय योजना के लिए अधिग्रहीत भूमि से अतिक्रमण हटाने से योजना के निर्माण एवं विकास कार्यों को गति मिलेगी।

किसानों को 150 रुपये अधिक मिलेगा गेंहू का समर्थन मूल्य

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। किसानों को उनकी फसल का वाजिब मूल्य मिल सके। इसके लिए पहली मार्च से सरकार द्वारा गेहूं की खरीद की जाएगी। गेहूं की खरीद के लिए जिले में 135 क्रय केंद्र बनाने का प्रस्ताव किया गया है। अब तक 29 केंद्र स्थापित किए जा चुके हैं। विभाग की ओर से इसको लेकर तैयारियां शुरू कर दी हैं। जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी गोरखनाथ त्रिपाठी ने बताया गेहूं की सरकारी खरीद एक मार्च से केंद्रों पर शुरू हो जाएगा। इसके लिए खाद्य विभाग, भारतीय खाद्य निगम, पीसीएफ उत्तर प्रदेश प्रादेशिक कोआपरेटिव फेडरेशन के 135 क्रय केंद्र बनाए जाएंगे। अब तक 29 स्थापित किए जा चुके हैं। उन्होंने बताया किसानों से इस वर्ष 2275 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से गेहूं की खरीद की जाएगी। इससे पहले 2125 रूपये समर्थन मूल्य था। केंद्र पर गेहूं बेचने के लिए किसान को पहले पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराना होगा। जिस किसान का रजिस्ट्रेशन हो जाएगा। उसी किसान का गेहूं क्रय केंद्र पर खरीदा जाएगा। उन्होंने बताया शासन से 72 घंटे में किसान के गेहूं का भुगतान कर दिया जाएगा। यह धनराशि किसान के बैंक अकाउंट में पहुंचेगी। इस बार 150 रुपये प्रति क्विंटल की बढ़ोत्तरी खरीद में की गई है। डिप्टी आरएमओ ने बताया कि गेंहू खरीद 2024–25 अंतर्गत बीते 15 फरवरी तक 787 किसान पंजीकरण करा चुके हैं।

पुलिस भर्ती परीक्षा में पकड़ा गया मुन्ना भाई दूसरे के स्थान पर लिख रहा था कापी

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। पुलिस भर्ती परीक्षा में सेंधमारी करके परीक्षा देने घुसे मुन्ना भाई को दबोच लिया गया। इटवा के माता प्रसाद जायसवाल इंटर कॉलेज के केंद्र व्यवस्थापक ने चेकिंग के दौरान संदेह होने पर पकड़ा। जांच में फर्जी पाए जाने के बाद पुलिस के हवाले कर दिया गया है। वह जिसक स्थान पर परीक्षा दे रहा था, उसे भीह पकड़ लिया है। पकड़ा गया आरोपी बिहार के मधुबनी जिले का बताया जा रहा है। जिले में 22 केंद्रों पर पुलिस भर्ती की लिखित परीक्षा शनिवार सुबह 10:00 बजे शुरू हुई। पहली पाली में इटवा थाना क्षेत्र के माता प्रसाद जायसवाल इंटर कॉलेज में चेकिंग के दौरान केंद्र व्यवस्थापक रमाकांत द्विवेदी ने एक परीक्षार्थी को पकड़ लिया। संदेह होने पर मिलान किया गया तो फर्जी निकला। इसके बाद उन्होंने पुलिस को बुलाकर उसे सुपुर्द कर दिया गया है। पकड़े गए मुन्ना भाई का नाम अर्जुन यादव निवासी मधुबनी राज्य बिहार बताया जा रहा है। वह जिसके स्थान पर परीक्षा दे था उसे पकड़ लिया गया है। पुलिस इसकी जांच कर रही है। केन्द्र व्यवस्थापक रमाकांत द्विवेदी ने बताया कि एक संदिग्ध को पकड़कर पुलिस के हवाले किया गया है। उन्होंने बताया कि ऐसे संदिग्ध परीक्षार्थियों को पकड़ने के लिए कई ऐजेन्सिया लगी हुई थी । उन्हीं लोगों से मिली जानकारी पर मैंने युवक को पकड़कर पुलिस को सुपुर्द कर दिया। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक प्राची सिंह ने बताया कि इटवा के केंद्र पर दूसरे के स्थान पर परीक्षा देते हुए एक संदिग्ध पकड़ा गया था। वहीं जिसके स्थान में परीक्षा दे रहा था उसको भी पकड़ दिया गया है। पुलिस पूछताछ कर रही है इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

बेतियाहाता से मेडिसिटी डॉक्टर तब जाएंगे, जब प्लॉट छोटे और कीमत कम हो

संवाददाता–गोरखपुर। शहर के बाहर अस्पताल खुलें, जिससे लोगों को जाम से राहत मिले, यह डॉक्टर भी चाहते हैं। वे भी मानते हैं कि बेतियाहाता बेतरतीब मेडिकल हब बन गया है, क्योंकि पार्किंग की व्यवस्था नहीं होने से दिन भर जाम की दिक्कत रहती है। खोराबार मेडिसिटी योजना में अगर प्लॉट के साइज छोटे और कीमत में सहूलियत मिल जाए तो किसी को ऐसा करने में दिक्कत नहीं आएगी। कुछ डॉक्टर बेतियाहाता के जाम को बड़ी दिक्कत तो मानते हैं, मगर मेडिसिटी उन्हें दूरी की वजह से रास नहीं आता है। चिकित्सकों का यह भी कहना है कि व्यावहारिक दिक्कतों को प्रशासन को भी समझना होगा। कई डॉक्टर नए अस्पताल बनवाने की तैयारी में हैं, लेकिन वे चाहते हैं कि उन्हें कुछ रियायत दी जाए। अगर पहल दोनों तरफ से निश्चित ही शहर के बाहर एक नया मेडिकल हब बन सकता है। डॉ. नदीम अरशद, चेस्ट रोग विशेषज्ञ ने कहा कि हमने मेडिसिटी में प्लॉट के लिए प्रयास किया था, लेकिन प्लॉट के साइज व रेट को लेकर दिक्कत आई। वहां जो प्लॉट व रेट मिल रहा है, उससे सस्ते दर पर निजी जमीनें उपलब्ध हैं। इसलिए हमने प्रयास छोड़ दिया। सरकार को ऐसा रेट तय करना चाहिए, जो पहुंच के अनुसार हो। इसके अलावा जमीन पर ब्याज मुक्त ऋण दिया जाना चाहिए, जिससे कि डॉक्टर अपना अस्पताल बना सकें। डॉ पंखुड़ी जौहरी नेत्र रोग विशेषज्ञ ने कहा कि अगर सारे डॉक्टरों के क्लीनिक व अस्पताल एक जगह हो जाएं तो यह मरीजों के लिहाज से बहुत ही अच्छा होगा। एक जगह ही सारी व्यवस्था हो जाएगी। मरीजों को अलग अलग स्पेशिएलिटी के डॉक्टर्स के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। मरीज खुद भी शहर के ट्रैफिक में फंसने से बचेंगे और दूसरों को भी राहत मिलेगी। इसके अलावा नजदीक होने पर अलग–अलग डॉक्टर्स एक मरीज के बारे में एक दूसरे की ओपिनियन भी आराम से ले सकेंगे।

अयोध्या को दर्शनार्थियों के आवागमन में सुविधा के लिए मिली दस नई बसें

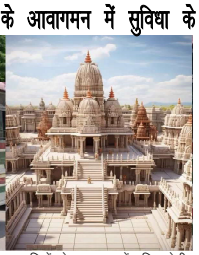

संवाददाता–अयोध्या। परिवहन निगम के अयोध्या परिक्षेत्र को 10 नई बसों का आवंटन कर दिया गया है। अयोध्या पहुंची सभी बसें साधारण श्रेणी की हैं। इसी के साथ अयोध्या परिक्षेत्र के चारों डिपो पर बसों का बेड़ा अनुबंधित को लेकर 360 पहुंच गया है। निगम का मानना है कि इन बसों के आ जाने से यात्रियों को आवागमन में सुविधा होगी। निगम के क्षेत्रीय प्रबंधक विमल राजन ने बताया कि 10 बसें अयोध्या पहुंच गई हैं। इनमें चार अयोध्या डिपो, चार सुलतानपुर डिपो और दो बसें अमेठी डिपो को आवंटित कर दी गई है। अयोध्या परिक्षेत्र में अब तक परिवहन निगम की 257 और अनुबंधित 93 बसें मिलाकर कुल 350 बसें संचालित हो रही थी। इन 10 बसों के जुड़ने से निगम की कुल बसों की संख्या 360 हो गई है। अयोध्या डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक आदित्य प्रकाश ने बताया कि मिलीं साधारण सेवा की चार बसों को लंबी दूरी के रूट पर संचालित किया गया जाएगा। इसके अलावा कुछ बसों को ग्रामीण क्षेत्र के रूटों पर संचालित करने की योजना है। इस पर कार्य किया जा रहा है। क्षेत्रीय प्रबंधक राजन की माने तो मार्च में अयोध्या परिक्षेत्र को 40 नई बसें और मिल जाएंगी, जिसके बाद किसी भी रूट पर यात्रियों को बसों की कमी नहीं होगी। उन्होंने कहा कि अयोध्या की गरिमा को ध्यान में रखकर बसों का आवंटन किया जा रहा है, जिससे अयोध्या आने जाने वाले दर्शनार्थियों को आवागमन की अच्छी व्यवस्था उपलब्ध कराई जा सके।

एड्स रोगियों की तलाश में गांव–गांव लगा रहे शिविर

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। उप्र राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा संचालित लिंक वर्कर स्कीम परियोजना के तहत स्वास्थ्य विभाग गांव–गांव शिविर लगाकर एड्स रोगियों की तलाश में जुटा है। शोहरतगढ़ क्षेत्र के एकडेंगवा भावपुर गांव स्थित कंपोजिट विद्यालय में शिविर लगाकर 120 से अधिक ग्रामीणों की स्क्रीनिंग करते हुए एड्स की जांच कराया गया। जांच में सभी की रिपोर्ट निगेटिव रही।

शिविर में बढ़नी पीएचसी पर तैनात एचआईवी (एड्स) काउंसलर शीला यादव, शोहरतगढ़ सीएचसी पर तैनात राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरबीएसके) चिकित्सक डॉ. पंकज, फार्मासिस्ट अमितेश, एएनएम हिमानी व राष्ट्रीय क्षयरोग उन्मूलन कार्यक्रम के वरिष्ठ उपचार पर्यवेक्षक वीरेंद्र प्रताप पुरी, स्टॉफ नर्स चंदा ने ग्रामीणों को बीमारी के संदर्भ में जानकारी देते हुए काउंसलिंग किया। काउंसलर शीला यादव ने शिविर में आए ग्रामीणों को बताया कि एचआईवी संक्रमण के कुछ हफ्तों के अंदर बुखार, गले में खरास, थकान जैसे फ्लू की दिक्कत महसूस होती है। शरीर से वजन घटना, बुखार, रात को पसीना होना और थकान होना एड्स का लक्षण है। उन्होंने बताया कि पेट दर्द, निगलते समय दर्द होना, सूखी खांसी, उल्टी, पतले दस्त, मतली, लगातार दस्त, मुंख में छाले या जीभ का सफेद होने जैसा अनुभव करना भी एड्स बीमारी का लक्षण है। इस तरह की दिक्कत होने पर तत्काल चिकित्सकीय परामर्श लें। शिविर में स्वास्थ्य टीम ने ग्रामीणों को एड्स बीमारी के बारें में जागरूकत करते हुए सभी की जांच भी कराया। जांच के दौरान 120 से अधिक लोगों का सैंपल लेकर परीक्षण किया गया, जिसमें सभी की रिपोर्ट निगेटिव रही।

सम्पत्तिकर के बकाए में कई सम्पत्तियां सील

संवाददाता–गोरखपुर। सम्पत्तिकर के बकाए में नगर आयुक्त गौरव सिंह सोगरवाल के निर्देश पर कई सम्पत्तियों को सील किया गया। आरोप है कि इन भवन स्वामियों ने बार–बार कहने पर भी अपने सम्पत्तिकर का भुगतान नहीं किया।

सभी को बकाया का बिल प्राप्त कराने के बाद दो माह पूर्व ही डिमांड नोटिस जारी किया गया था। उसके बाद भी भवन स्वामियों ने सम्पत्तिकर का भुगतान नहीं किया। शुक्रवार को नगर निगम ने कार्यवाही करते हुए इन सम्पत्तियों को सील कर दिया है। सीलिंग की कार्रवाई के दौरान कर अधीक्षक विपुल विक्रम राय, संदीप कुमार सिंह, सहायक नगर आयुक्त जोनल अधिकारी जोन नम्बर चार अविनाश प्रताप सिंह समेत राजस्व टीम, ईटीएफ एवं पुलिस बल भी तैनात रहा। जोन संख्या 4 में दो सम्पत्ति की तालाबन्दी की गई जिनमें पहली सम्पत्ति वार्ड संख्या में 10 लच्छीपुर में भवन 346 एच में हरिशचंद्र अपार्टमेंट में नितिन जायसवाल, नवीन, नीरज के फ्लैट सील किए गए।

राजू दास ने शेयर की भारत–पाक बॉर्डर पर उजाड़ हुए मन्दिर की तस्वीर, 11 महीने पहले अमित शाह ने किया था ई–उद्घाटन

संवाददाता–अयोध्या। अयोध्या के हनुमंतगढ़ी के महंत राजू दास अपने एक्स यानी ट्विटर पर भारत–पाकिस्तान बॉर्डर पर स्थित मंदिर की तस्वीर शेयर की है। यह तस्वीर शारदा पीठ की है। इसके बारे में बताया जाता है कि यह सरस्वती का प्राचीन मन्दिर है। माना जाता है कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में शारदा के निकट किशनगंगा नदी (नीलम नदी) के किनारे स्थित है। यह भारत–पाक नियंत्रण–रेखा यानी की एलओसी के बेहद करीब है। तस्वीर में मंदिर बेहद उजाड़ दिखाई दे रहा है। इसमें छत भी नहीं है। महज पत्थ्थर के ढांचे पर किसी तरह खड़े हुए इस मंदिर में सफेद शीलालेख भी है। इसमें इसके इतिहास के बारे में जानकारी है। इंटरनेट पर मौजूद अलग–अलग जानकारियों के अनुसार, आजादी की लड़ाई और भारत–पाक विभाजन के बाद शारदा पीठ पर जाने वाले दर्शनार्थियों में काफी कमी आई है। असल में वहां जाने के लिए अलग से प्रमाण पत्र लेना पड़ता है। हालांकि ऐसा केवल भारतीयों को करना होता है। इसे अनापत्ति प्रमाणपत्र कहा जाता है।

मार्च 2023 में भारतीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि सरकार मंदिर के लिए करतारपुर शैली का गलियारा खोलने की दिशा में आगे बढ़ेगी। हालांकि अभी इस दिशा में कदम बढ़ाए जाने बाकी हैं। इस मंदिर में मां शारदा हाथ पर घंटा, अमृत कलश, शक्ति अस्त्र, धनुष, वाण, रत्न कलश लिए शेर के ऊपर विराजमान हैं।

भाजपा शासन में सहकारिता क्षेत्र को मिली मजबूती –जितेंद्र

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। सहकारिता क्षेत्र को व्यापक बनाने तथा इस देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत कड़ी के रूप में विकसित करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने केंद्र में अलग से सहकारिता मंत्रालय का गठन किया। भाजपा के शासनकाल में सहकारिता आंदोलन को एक नई दिशा और गति मिल रही है। ये बातें उत्तर प्रदेश सहकारी बैंक के अध्यक्ष (दर्जा राज्यमंत्री) जितेंद्र बहादुर सिंह ने भाजपा कार्यालय पर कमजोर बूथ व सहकारी महासम्मेलन में सहकारी जन प्रतिनिधियों की बैठक में कही। उन्होंने कहा कि भाजपा की ओर से प्रदेश की राजधानी डिफेंस एक्सपो ग्राउंड में सहकारिता सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में सहकारिता व गृह मंत्री अमित शाह विभाग में कार्य करने वाले लोगों में नई ऊर्जा का संचार करेंगे। भाजपा सहकारिता प्रकोष्ठ के क्षेत्रीय संयोजक ओम प्रकाश मौर्य ने कहा सहकारिता में कार्य करने वाले पदाधिकारी अपने–अपने बूथ पर भाजपा को मजबूत करें। जिससे केंद्र में तीसरी बार नरेंद्र मोदी की सरकार बने। जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष कुंवर विक्रम सिंह ने कहा कि गैर भाजपा सरकारों में सहकारिता के क्षेत्र में कोई कार्य नहीं हो रहा था, पर भाजपा की सरकार बनने के बाद तेजी से सुधार हुआ है। इस दौरान चेयरमैन डीसीएफ अजय उपाध्याय, क्षेत्रीय सह संयोजक दिलीप चतुर्वेदी, साधना चौधरी, दीपक मौर्य, फतेबहादुर सिंह, आशीष शुक्ला, महेंद्र लोधी आदि उपस्थित थे। संचालन सह संयोजक फूलचंद जायसवाल ने किया। उत्तर प्रदेश सहकारी बैंक के अध्यक्ष जितेंद्र बहादुर सिंह को जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष कुंवर विक्रम सिंह ने जिले से संबंधित मांगपत्र सौंपा। जिसमें जनपद में बंद पड़ी 10 शाखाओं को संचालित कराने, जिला सहकारी बैंक को विविधीकरण ऋण वितरण पर भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से लगाए गए प्रतिबंध को हटाने के लिए पहल करने, छह शाखाओं में मात्र आठ कर्मचारी होने के मद्देनजर कर्मियों की भर्ती कराने, बैंक संचालन के लिए अतिरिक्त पैकेज देने की मांग की गई।

पुलिस, एसओजी संग मुठभेड़ में चोरी के एक आरोपित के पैर में लगी गोली

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। उस्का बाजार थाना क्षेत्र के पकड़ी बाजार में शुक्रवार की देर रात पुलिस, एसओजी की संयुक्त टीम के साथ चोरों की मुठभेड़ हुई। इसमें एक आरोपित के बाएं पैर में गोली लगी जबकि दूसरा पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया। मुठभेड़ में घायल आरोपित कांशीराम आवास का रहने वाला है। एसपी प्राची सिंह ने बताया कि 12 फरवरी की देर रात उस्का बाजार थाना क्षेत्र में चोरी हुई थी। इसके खुलासा के लिए टीम लगी हुई थी। शुक्रवार की रात सूचना मिली कि कुछ संदिग्ध पकड़ी बाजार चौराहे पर देखे गए हैं। इसके बाद टीम मौके पर पहुंची तो संदिग्धों ने पुलिस टीम पर फायर कर दी। इसके बाद पुलिस टीम ने भी फायरिंग की। इसमें एक आरोपित वसीम(24) के पैर में गोली लगी और उसका दूसरा साथी बाइक लेकर भागने में सफल रहा। घायल आरोपित का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है। आरोपित के पास से एक तमंचा, कारतूस व चोरी का सामान बरामद हुआ है।

विभागीय लापरवाही की भेंट चढ़ गई हर घर नल योजना

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। स्थानीय विकास खंड के ग्राम पंचायत प्रतापपुर चमुर्खा में हर घर नल योजना लापरवाही की भेंट चढ़ गई है। लोगों के घरों तक स्वच्छ पेयजल पहुंचाने के लिए बिछाई गई पाइपलाइन में जगह–जगह लीक होने के कारण पानी की बर्बादी किया जा रहा है। प्रतापपुर चमुर्खा में ग्राम पंचायत में बनी पानी की टंकी से सप्लाई होने वाली लाइन से अयोध्या रोड से विद्युत उपकेंद्र को जाने वाले रास्ते पर विगत तीन माह से पाइपलाइन में लीकेज है। लीकेज होने के चलते सप्लाई के समय लगातार पानी रास्ते पर रिसता रहता है। लोगों ने मदनगढ़ स्थित पंप पर जाकर गेटमैन से मामले की शिकायत की किन्तु इसके बाद भी ठीक नहीं किया गया। सरकार जल संरक्षण के प्रति भले विभिन्न योजनाएं चला रही है किन्तु जल निगम के कर्मचारियों के लापरवाही के चलते स्वच्छ पानी बर्बाद हो रहा है।

महिला ने मां सीता पर की अभद्र टिप्पणी, वीडियो वायरल

संवाददाता–संतकबीरनगर। सोशल मीडिया पर एक महिला का वीडियो सामने आया है। ये महिला मां सीता और भगवान राम के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी कर रही है। बताया जा रहा है कि महिला का नाम संगीत सिंह है, संतकबीर नगर की रहने वाली है। ये वीडियो इंटरनेट पर तेजी से वायरल हो रहा है। वहीं, संतकबीर नगर पुलिस ने पोस्ट करते हुए लिखा कि उक्त प्रकरण में थाना बखिरा जनपद संतकबीरनगर में अभियोग पंजीकृत कर अन्य विधिक कार्रवाई प्रचलित हैं।मिली जानकारी के मुताबिक मां सीता पर की गई अभद्र टिप्पणी से लोगों में काफी नाराजगी है। लोग पुलिस से महिला के खिलाफ कार्रवाई करने की बात कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि इससे हमारी भावनाएं आहत हुई हैं, हम चाहते हैं कि महिला पर कठिन कार्रवाई हो, जिससे आगे कभी ऐसा करने की हिम्मत ना करें। सोशल मीडिया पर महिला काफी एक्टिव रहती है। वह लगातार इस तरह की वीडियो को बनाती रहती है। वीडियो में महिला पुलिस को भी धमकी दे रही है और ये भी कहती है सिर कटवा लें लेकिन झुंकेगे नहीं।

गुमशुदगी सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है प्रार्थी सभापति उपाध्याय पुत्र श्री रामकरन ग्राम– उभाई पोस्ट– भदावल तहसील हर्रैया जनपद बस्ती का निवासी हूं। विनोद उपाध्याय, अशोक उपाध्याय, वृजेश उपाध्याय मेरे पुत्रगण हैं और श्रीमती अर्चना पत्नी स्वर्गीय दिनेश पुत्रबधू हैं। दिनांक 17–02–2024 को शपथ पत्र के माध्यम से मैं चारो लोगों को अपने चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर रहा हूं। अपने किसी भी कृत्य के लिये वे स्वयं जिम्मेदार होंगे।

बच्चों व महिलाओं की सूची तैयार कर करे टीकाकरण

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। ब्लॉक सभागार में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित की गई। अधीक्षक डॉ॰ शैलेंद्र मणि ओझा ने उपस्थित आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं से कहा कि सभी लाभार्थी बच्चों व महिलाओं का सूची तैयार कर लें। टीकाकरण सत्र पर उपस्थित रहकर एएनएम का सहयोग करें। डॉ ओझा ने कहा कि टीकाकरण सत्र पर आए दिन आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के उपस्थित ना रहने की शिकायतें मिल रही है, जो बहुत ही गलत है। माह के पहले व तीसरे बृहस्पतिवार को होने वाले ट्रिपल ए बैठक में लाभार्थी बच्चों व गर्भवती महिलाओं का सूची के साथ ही धात्री महिलाओं, कुपोषित बच्चों की सूची तैयार कर समय पर उपलब्ध कराएं। जिससे उनको लाभ मिल सके। आगे से किसी भी शिकायत पर तुरंत कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान संजय कुमार गुप्ता, सूर्यदेव सिंह, सुषमा द्विवेदी, शकुंतला, शिखा, मंजू, नीता, अंजनी उपस्थित रहे।

अदालती नोटिस

इश्तहार मजरिया अदालत– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती
जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं. 275/2023
मन्दाकिनी गुप्ता–सायलान
1. मन्दाकिनी गुप्ता पत्नी स्व0 अरविन्द कुमार गुप्ता 2. उत्तम पुत्र स्व0 अरविन्द कुमार गुप्ता 3. कु0 आस्था पुत्री स्व0 अरविन्द कुमार गुप्ता नावालिगान वली श्रीमती मन्दाकिनी गुप्ता माता पत्नी स्व0 अरविन्द कुमार गुप्ता 4. श्याम नरायन गुप्ता पुत्र हरिशंकर 5. जयंत्री देवी पत्नी श्यामनरायन गुप्ता निवासगण ग्राम ओड़वारा तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरव तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 07–03–2024

प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा–372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम–1925
दरख्वास्त मुसम्मा
वास्ते हुसूल सर्टीफिकेट वसूल कर्जा व विकालत हाय दरख्वास्त मुसम्मा मुतवफ्फा अपने बमूजिब एक्ट 7 सन 1889 ई0 वकैद

हरगाह मुसम्मा ने दरख्वास्त हुसूल सर्टीफिकेट गुजरानी है और तारीख माह सन ई0 वास्ते समाअत दरख्वास्त के मुकर्रर हुई है। लिहाजा यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि किसी को निस्बत के उज्र हो या असालतन या वकालतन वक्त 10 बजे सुबह अदालत सिविल जज (जू0डि0) बस्ती बतारीख पेशी 07–03–2024 मुकर्रर हाजिर होकर उज्र अपना पेश करें। दरसूरत इनकजाय तारीख मजकूर के फिर उज्र किसी का सुना न जायेगा और हुक्म मुनासिब निस्बत दरख्वास्त मजकूर के सादिर होगा।
अलमरकूम माह सन 20 ई0।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

विपक्षी व्यक्ति के नाम नोटिस
(धारा–63 अनुसूची–5 प्रपत्र सं0–1)
न्यायालय– श्रीमान प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय बस्ती जिला–बस्ती
याचिका सं0 398/11/2023
थाना–वाल्टरगंज
जिला–बस्ती

ज्योति कुमारी
बनाम
अजय

तारीख पेशी 27–03–2024
प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 125 सी0आर0पी0सी0

विपक्षी–अजय उम्र 31 साल पुत्र प्रहलाद साकिन सन्तपुर उर्फ गदहाखोर थाना पुरानी बस्ती जिला बस्ती

विपक्षी

के नाम
चूंकि आपकी उपस्थिति 125 सी. आर.पी.सी. के अपराध का उत्तर देने के लिए आवश्यक है अतएव आपको एतत द्वारा आदेश दिया जाता है कि स्वयं/अधिवक्ता द्वारा उपयुक्त न्यायालय के समक्ष सन् 2024 ई0 के 03 मास के 27 दिवस को उपस्थित हो। ऐसा करने में त्रुटि न हो।
सन् 20 ई0 मास के दिवस को हस्ताक्षरित हो।
हस्ताक्षर
प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय बस्ती

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती
जिला–बस्ती
वाद सं0 11/2021
राजेन्द्र आदि
बनाम
सरकार
1. सरकार उ0प्र0 द्वारा जिलाधिकारी बस्ती 2. ग्राम पंचायत जरिये चेयरमैन भूमि प्रबन्धक समिति ग्राम बारीघाट तप्पा बड़गोपगार परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 27–03–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 27 माह 03 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्ताई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा। बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
द0 हाकिम

दैनिक
भारतीय बस्ती
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह
संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com
bhartiyabasti@gmail.com